

# जिनभाषित

वीर निर्वाण सं. 2532

कुण्डलपुर - बड़े बाबा

के निर्माणाधीन  
नवीन मन्दिर की आकृति

फाल्गुन, वि.सं. 2062

मार्च, 2006



# बड़े बाबा से हाथ नहीं मिलाओ, हाथ जोड़ो, हस्तक्षेप नहीं, नतमस्तक हो जाओ

कुण्डलपुर में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा प्रदत्त प्रवचन

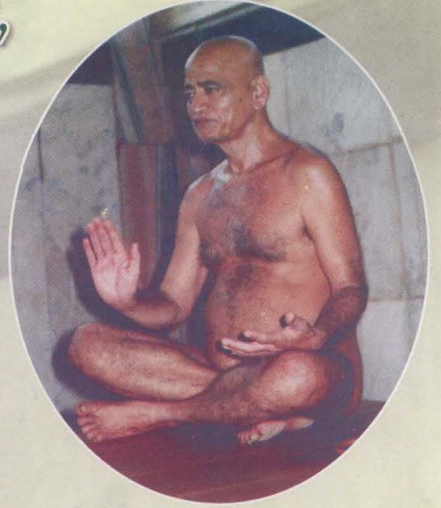
एक स्थान पर मंदिर में चित्र देखा था। उसमें सुमेरु पर्वत के ऊपर पांडुकशिला पर कलश-अभिषेक हो रहा था। सौधर्म इन्द्र होनहार श्री जी पर कलश अभिषेक कर रहे थे, सभी की दृष्टि सौधर्म इन्द्र पर चली जाती है। भाग्यशाली तो वे होते हैं, जिनके हाथ में कलशा है, एक सामने भरा कलशा लेकर खड़ा है, उसके समीप एक और खड़ा है, ऐसी कलश माला का अन्त क्षीरसागर के अंत पर है। सौधर्म इन्द्र में जो प्रसन्नता है, तट पर खड़े देव के मन में भी वही उत्साह, प्रसन्नता है। यहाँ भी प्रसन्नता है। हमेशा लाइट में नहीं रहने वाले ही लाइट प्रदान करते हैं। आप सोच लें, उनका कितना योगदान है। उन सभी को सर्वप्रथम हमारा आशीर्वाद है। न जाने किन-किन व्यक्तियों का भाव इस महोत्सव के प्रति रहा, जिसका मापतौल नहीं हो सकता। माप तो स्थान के माध्यम से, गुणस्थान के माध्यम से होता है। स्थान जड़त्व की ओर, तो गुणस्थान भावप्रणाली की ओर ध्यान आकृष्ट कर देते हैं। भक्ति में कोई भी कम बढ़ नहीं है, बोलने से ही भक्ति की अभिव्यक्ति होती, ऐसा नहीं, बिना बोले भीतर के भाव अभिव्यक्त हो जाते हैं। बड़े बाबा के इस कार्य के प्रति कौन से व्यक्ति के हृदय में आनंद की तरंगे (जिसे ज्वारभाटा कह दें) नहीं उठ रही हैं? हम अनुमान नहीं लगा सकते, महसूस कर सकते हैं।

जीव का आकार प्रकार नहीं हुआ करता। आत्मा के पास ज्ञान गुण भी है, चारित्र गुण भी है एवं एक दूसरा दर्शन भी है, जिसे सम्यग्दर्शन बोलते हैं, जिसकी मोक्षमार्ग में क्या भूमिका है बता नहीं सकते। जिस महाप्रासाद को खड़ा होना है वह आस्था पर खड़ा होता है, इसे नींव कह दें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। नींव की आज तक कोई फोटो नहीं ली। नींव के विषय में तभी हम विश्वास करते हैं, जब विशाल प्रासाद को खड़ा हुआ देखते हैं। तब हम सोचते हैं कि इसके नीचे कितनी गहरी भूमिका होगी। शिखर की पूजा, शिखर की प्रशंसा सभी करते हैं, नींव की नहीं होती। नींव रखना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। नींव प्रथम मंगलाचरण है तो कलशारोहण अंतिम समापन है। प्रथम मंगलाचरण को महत्त्व दिया जाता है, उपरान्त ही मध्यम एवं अंतिम मंगलाचरण का नम्बर आता है। भक्ति, आस्था, रुचि, सम्यग्दर्शन, प्रीति

ऐसे शब्दों की चैन है, जिसे समस्त आचार्यों ने महत्त्वपूर्ण कह ध्यान आकृष्ट किया है।

जब श्रीराम, सीता को खो देते हैं

तब सीता की खोज हनुमान करते हैं, सीताजी कहती हैं पहले विश्वास दिलवाओ। हनुमान मुद्रा दिखाते हैं, तब सीताजी विश्वास करती हैं। भेंट में हनुमान को हार मिल जाता है। एक-एक मणि को फोड़कर देखते हैं। राम की तस्वीरवाली मणि रख लेते हैं। सीता जी पूछती हैं- ये क्या? तब कहते हैं- जो हमारे काम के हैं, उन्हें ही पहनूँगा। ये काम हो गया, परीक्षा हनुमान की हो गई। पूरी सभा को हृदय खोलकर दिखाया, उसमें राम लक्ष्मण सीताजी बैठे थे, चरणों में हनुमान भी बैठे थे। सब लोगों की आँखों में पानी आया राम के प्रति समर्पण देखकर। यहाँ बड़े बाबा को समर्पित पूरी भारतवर्ष की जनता है, जो यहाँ आ गयी, जो नहीं आया वहीं से उसकी भावना समर्पित हुई। कौन-कौन से व्यक्ति ने इस मांगलिक कार्य में सहयोग किया, हम भावाव्यक्ति के माध्यम से पता लगाते हैं। “ज्ञान चिल्लाता है। आपत्ति जब आती है, आस्था झेलती है।” ज्ञान के माध्यम से हम सुन भर, जानभर लेते हैं। आत्मा में झेलने की क्षमता आ जाती है। एक मात्र आस्था का योगदान होता है। किस व्यक्ति में पीड़ा नहीं थी, वर्षों से लोग चाहते थे, आप अपने घर को अच्छा बनाने योजनाबद्ध ढंग से एक मंजिल दो मंजिल तीन मंजिल चार मंजिल अपने ढंग से स्वतंत्रता से खड़ा कर लेते हैं। जहाँ बड़े बाबा विराजमान थे, इतिहास की चीज है, ये है नहीं कल से इतिहास पलट गया है। हम लोगों की कमजोरी थी, हमारी आस्था की परीक्षा नहीं हुई थी। अपनी वस्तु अपने आराध्य अपने पूज्य जिनके माध्यम से हमें दृष्टि प्राप्त है उनके सिंहासन के लिये परमीशन दो। “बड़े बाबा से हाथ नहीं मिलाओ, हाथ जोड़ो, हस्तक्षेप नहीं करो, नतमस्तक हो जाओ।” यह मूर्ति जिससे तीन लोक प्रकाशित हैं, तीन लोक के नाथ की है। हम लोगों को आस्था चाहिये। वर्षों पहले यह कार्य





होना चाहिये था। सुबह का भूला शाम को वापस आ जावे, वह भूला नहीं माना जाता। अब यहाँ से सर्चलाइट की किरणें दूर-दूर तक जायेंगी। कुण्डलपुर बड़े बाबा का स्थान है। जिस मूर्ति के सामने आज तक लाखों करोड़ों जनता ने नतमस्तक होकर दिव्य दृष्टि प्राप्त की, जो काम हुआ आस्था के कारण उद्घाटित होकर सामने आया।

जिस देश में ऐसे पवित्र स्थल होते हैं, उन स्थानों को सुरक्षित रख कर जैन समाज ने पुरातत्त्व को सुरक्षित ही किया है। पुरातत्त्व विभाग को एक प्रकार से प्रेरणा दी है। हमारे भगवान बड़े बाबा अधूरे नहीं हैं, पूरा तत्त्व हैं। हमें पूरा तत्त्व चाहिये। अधूरे तत्त्व के माध्यम से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं होती। 4 वर्ष पूर्व महोत्सव हुआ था, जो मुख्यमंत्री आये थे तो उन्होंने लाखों के बीच कहा था, यह कार्य बहुत जल्दी होना चाहिये। 4 वर्षों बाद आज उसी आवाज को पकड़कर लगातार पुरुषार्थ के फलस्वरूप नया इतिहास रच गया। आस्था के सामने हम क्या कर सकते हैं, वह पूरा तत्त्व है, अपने आस्था को उद्घाटित करने की बात करें। बड़े

बाबा के प्रति आस्था कमजोर है, तो उसे बलवान बनाने का प्रयास करो। अपनी आस्था को सजीव बनाओ। देश-विदेश में यह ऐसा आदर्श कार्य हुआ, जो अध्यात्म की ओर मोड़ने की अवश्य ही एक प्रेरणा देगा। जड़ की ओर प्रेरणा देने वाली बातें बहुत होती हैं, चेतन की ओर मोड़ना प्रेरणा देना अत्यावश्यक है। दक्षिण में फरवरी में श्रवणवेलगोला में महामस्तकाभिषेक होने जा रहा है। यहाँ से जनता वहाँ जायेगी, जो बड़े बाबा का संदेश लेकर जायेगी। बाहुबली भगवान वृषभनाथ के सुपुत्र माने जाते हैं, पहले यहाँ अभिषेक करेंगे। यहाँ का गंधोदक वहाँ ले जाकर लोगों पर छिड़कें। सभी को बतायें कि अभी तक अंधकार में, अन्डरग्राउन्ड में प्रतिमा रखी थी, इन्तजार में थी कब उच्च सिंहासन पर आये। बड़े बाबा के पास जैन-जैनेतर सभी आते हैं। जो लाइट में नहीं आये, उन्हें भी देखने की कोशिश करें, सभी के योगदान से यह कार्य हुआ, आगे भी होता रहे।

अहिंसा परमोधर्म की जय

## ‘जिनभाषित’ ( हिन्दी मासिक ) के सम्बन्ध में तथ्यविषयक घोषणा

प्रकाशन स्थान	:	1/205, प्रोफेसर्स कालोनी, आगरा-282002 (उ.प्र.)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
मुद्रक-प्रकाशक	:	रतनलाल बैनाड़ा
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	1/205, प्रोफेसर्स कालोनी, आगरा-282002 (उ.प्र.)
सम्पादक	:	प्रो. रतनचन्द्र जैन
पता	:	ए/2, मानसरोवर, शाहपुरा, भोपाल-462039 (म.प्र.)
स्वामित्व	:	सर्वोदय जैन विद्यापीठ, 1/205, प्रोफेसर्स कालोनी, आगरा-282002 (उ.प्र.)

मैं, रतनलाल बैनाड़ा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य है।

रतनलाल बैनाड़ा, प्रकाशक

## आचार्य श्री विद्यासागर जी के सुभाषित

- प्रत्येक व्यक्ति के पास अपना-अपना पुण्य-पाप है, अपने द्वारा किये हुए कर्म हैं। कर्मों के अनुरूप ही सारा का सारा संसार चल रहा है, किसी अन्य के बलबूते पर नहीं।
- फोटो उतारते समय हमारे जैसे हाव-भाव होते हैं, वैसा ही चित्र आता है, इसी तरह हमारे परिणामों के अनुसार ही कर्मास्रव होता है।

‘सागर बूँद समाय’ से साभार

मार्च 2006

## मासिक जिनभाषित

वर्ष 5, अङ्क 14

**सम्पादक**  
प्रो. रतनचन्द्र जैन

### कार्यालय

ए/2, मानसरोवर, शाहपुरा  
भोपाल- 462 039 (म.प्र.)  
फोन नं. 0755-2424666

### सहयोगी सम्पादक

पं. मूलचन्द्र लुहाड़िया,  
(मदनगंज किशनगढ़)  
पं. रतनलाल बैनाड़ा, आगरा  
डॉ. शीतलचन्द्र जैन, जयपुर  
डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत  
प्रो. वृषभ प्रसाद जैन, लखनऊ  
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर

### शिरोमणि संरक्षक

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी  
(आर.के. मार्बल)  
किशनगढ़ (राज.)

श्री गणेश कुमार राणा, जयपुर

### प्रकाशक

सर्वोदय जैन विद्यापीठ  
1/205, प्रोफेसर्स कॉलोनी,  
आगरा-282002 (उ.प्र.)  
फोन : 0562-2851428, 2852278

### सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक	5,00,000 रु.
परम संरक्षक	51,000 रु.
संरक्षक	5,000 रु.
आजीवन	500 रु.
वार्षिक	100 रु.
एक प्रति	10 रु.

सदस्यता शुल्क प्रकाशक को भेजें।

### अन्तस्तत्त्व

पृष्ठ

- **सम्पादकीय** : कुण्डलपुर में घटित ऐतिहासिक सुघटना 3
- **प्रवचन**
  - ◆ बड़े बाबा से हाथ नहीं मिलाओ .....  
: आचार्य श्री विद्यासागर जी आ. पृ. 2
- **लेख**
  - ◆ बड़े बाबा के मंदिर की जीर्णता : पं. नाथूलाल जी शास्त्री 4
  - ◆ कुण्डलपुर में बड़े बाबा के निर्माणाधीन मंदिर की  
यथार्थ स्थिति : वीरेश सेठ 6
  - ◆ जैन संस्कृति रक्षा मंच जैनत्व की चिंता क्यों नहीं कर पाया?  
: निर्मल कुमार पाटोदी 10
  - ◆ चिंता पुरातत्त्व से बढ़कर पूरे तत्त्व की कीजिये  
: निर्मल कुमार पाटोदी 12
  - ◆ श्रृंगार दुल्हन का : राह संन्यास की : जयकुमार जैन 'जलज' 15
  - ◆ सूतक एवं मरणसूतक : शास्त्रीय चर्चा  
: डॉ. श्रेयांसकुमार जैन 17
  - ◆ परम पूज्य गुरुदेव 108 श्री समन्तभद्र जी महाराज  
: डॉ. ज्योति जैन 20
  - ◆ साहित्याचार्य जी की साहित्य-साधना : डॉ. राजेश जैन 22
  - ◆ फल, साग की सही प्रासुक विधि एवं सावधानियाँ  
: पं. राजकुमार जैन 23
- **प्राकृतिक चिकित्सा**
  - ◆ योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा : डॉ. वंदना जैन 26
- **जिज्ञासा-समाधान** : पं. रतनलाल बैनाड़ा 28
- **बोध कथाएँ**
  - ◆ बिना विवेक की नकल : सुशीला पाटनी 5
  - ◆ व्यसन की आग : सब करदे राख 27
- **कविताएँ**
  - ◆ पुरातत्त्व कानून पर पुनः गौर कीजिये : सुभाष चन्द्र 'सरल' 9
  - ◆ घनिष्ट मित्रता : बेला जैन 11
- **समाचार** 30

लेखक के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

जिनभाषित से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

## कुण्डलपुर में घटित ऐतिहासिक सुघटना

कुण्डलपुर (दमोह, म.प्र.) में 17 जनवरी 2006 को एक ऐतिहासिक सुघटना घटित हुई, एक प्रशस्त अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। 'बड़े बाबा' नाम से प्रसिद्ध आद्य तीर्थंकर श्री आदिनाथ की पन्द्रह सौ वर्ष प्राचीन विशाल प्रतिमा एक दो-ढाई सौ वर्ष पुराने संकीर्ण, जर्जर, अन्धकारग्रस्त छोटे से तलघररूप मन्दिर से निकाल कर नवनिर्माणोन्मुख सुदृढ़, उच्च पृष्ठभूमिमय, विशाल जिनालय की वेदी पर स्थापित कर दी गयी। परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी एवं कई कुशल इंजीनियरों के सुविचारित मार्गदर्शन में, अनेक भक्तिगद्गद मुनिवरों, आर्यिकाश्रियों एवं श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं की उज्ज्वल दृष्टि के समक्ष यह ऐतिहासिक अभिनन्दनीय अनुष्ठान अत्यन्त कुशलतापूर्वक निष्पन्न हुआ।

प्रतिमा की विशालता और भव्यता को देखते हुए उसके लिए निर्मित किये जा रहे सुदृढ़ और विशालमन्दिर- जैसे मन्दिर का निर्माण तो उसी समय हो जाना चाहिये था, जब पुण्यात्मा शिल्पी उसे इतने उत्तुंग और विस्तृत आकार में गढ़ रहे थे। किन्तु संभवतः इसके लिए उस समय काललब्धि का योग नहीं था। जैसे पाषाणभूत अहिल्या अपने पुनरुज्जीवन के लिए श्रीराम की प्रतीक्षा कर रही थीं, वैसे ही बड़े बाबा की प्रतिमा को अपनी विशालता के अनुरूप विशाल मन्दिर में स्थापित होने के लिए दक्षिण से आनेवाले एक अद्भुत परम तपस्वी की प्रतीक्षा थी। 17 जनवरी 2006 को काललब्धि आयी और बड़े बाबा अपनी विशालता के अनुरूप भावी विशालमन्दिर की विशाल वेदी पर सुरक्षित रूप से विराजमान हो गये।

जैसा कि बड़े बाबा-मन्दिर-निर्माण-समिति के प्रभारी श्री वीरेश सेठ ने पत्रकार-सम्मेलन में बतलाया, बड़े बाबा का पुराना मन्दिर पूर्णतया जीर्ण-शीर्ण हो गया था ओर विगत 12 वर्षों में आये भूकम्प एवं काल के प्रभाव से मन्दिर के मण्डप में बड़ी-बड़ी दरारें आ गयी थीं। मन्दिर की आधारभूमि भी सुदृढ़ नहीं थी, भूगर्भशास्त्रियों ने उसे कमजोर क्षेत्र घोषित किया था। इसलिए बड़े बाबा की प्रतिमा में मूर्तिमान् पन्द्रह सौ वर्ष पुराने जैन इतिहास, प्राचीन धार्मिक महिमा और पुरातन भारतीय शिल्प एवं संस्कृति की रक्षा के लिए भूकम्पप्रभावसह नवीन मन्दिर का निर्माण कर उसमें बड़ेबाबा की प्रतिमा का स्थानान्तरण अत्यन्त आवश्यक था। परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी के आशीर्वाद और जैन समाज के पुण्योदय के फलस्वरूप यह मंगल कार्य संभव हुआ। यह नवीन मन्दिर न केवल विशाल और सुदृढ़ होगा, अपितु कला की दृष्टि से भी मनोहर होगा। सैकड़ों वर्ष बाद यह स्वयं पुरातत्त्व बन जायेगा और इसमें सुरक्षित बड़े बाबा बड़े पुरातत्त्व अर्थात् पुरातम-तत्त्व बन जायेंगे।

पुराना मन्दिर बड़ा संकीर्ण था। दस-बीस दर्शनार्थियों के भीतर चले जाने पर ही भर जाता था। और द्वार इतना छोटा था कि दो-चार दर्शनार्थी ही द्वार पर खड़े हो जाते, तो पीछे खड़े दर्शकों को बड़े बाबा के दर्शन दुर्लभ हो जाते थे। भीतर पूजन के लिए स्थान पर्याप्त नहीं था। सन्ध्याकालीन आरती के समय धक्का-मुक्की करके लोग भीतर जाने की कोशिश करते थे, इस पर भी कुछ ही लोगों को भीतर स्थान मिल पाता था। पंचकल्याणक आदि के मौकों पर जब मस्तकाभिषेक होता था, तब श्रीमन्त और उनके कुटुम्ब ही भीतर जाने का अधिकार प्राप्त कर पाते थे। अच्छे-अच्छे शीलवन्त और विद्यावन्त बाहर टापते रहते थे। सामान्य स्त्री-पुरुषों की तो बात ही क्या ?

अब बड़े बाबा निर्माणाधीन नये बृहदाकार मन्दिर की विस्तृत वेदिका पर विराजमान हो गये हैं। गर्भगृह का द्वार भी विशाल है और उसके सामने बहुत लम्बा-चौड़ा मण्डप है, जिसमें हजारों लोग एक साथ बैठकर या खड़े होकर बड़े बाबा के दर्शन-पूजन-आरती सुविधापूर्वक कर सकते हैं और मस्तकाभिषेक को भी आसानी से देख सकते हैं। अब लोगों को यह शिकायत नहीं होगी कि बड़े बाबा की आरती-अभिषेक आदि पैसेवालों और पहुँचवालों को ही करने-देखने को मिल पाते हैं।

नवीन वेदिका पर बड़े बाबा को बहुत ही सुमान-प्रमाणपूर्वक, बड़ी समरूपता से स्थापित किया गया है, जिससे दृश्य बड़ा अभिराम लगता है। प्रस्तावित शैली में मन्दिर बन जाने पर प्रतिमा के सौन्दर्य में चार चाँद लग जायेंगे, इसमें सन्देह नहीं। गत फरवरी मास के प्रथम सप्ताह में मैंने सपरिवार कुण्डलपुर की यात्रा की थी और नवीन वेदी पर स्थापित बड़े बाबा के दर्शन किये थे। उस समय विशाल मण्डप में सैकड़ों लोगों को एक साथ बैठकर भजन-पूजन करते हुए देखा, तो लगा युग बदल गया है, जनता का राज आ गया है, बड़े बाबा सबकी पहुँच में आ गये हैं।

बड़े बाबा के स्थानान्तरण को लेकर जो विवाद उठाया गया है, वह निराधार है। इसका स्पष्टीकरण 'जिनभाषित' के पूर्व अंक एवं प्रस्तुत अंक में प्रकाशित अनेक लेखों से हो जाता है। बड़े बाबा और छोटे बाबा दोनों जयवन्त हों।

# बड़े बाबा के मंदिर की जीर्णता

पं. नाथूलाल जी शास्त्री

कुण्डलपुर (दमोह) में गोलाकार छोटी पहाड़ी के उत्तरी सिरे पर 60 मंदिर हैं, जिनमें मढ़िया-गुमटी-टोंक आकार के कुछ लघु-बड़े मंदिर हैं। सन् 1554 से यह तीर्थक्षेत्र कहलाता है। इनमें मूर्तियाँ बाहर से लाकर रखी गई हैं। 1548 से 1996 तक की मूर्तियाँ हैं। धर्मशाला के निकट वर्द्धमान सागर सरोवर है। तालाब के किनारे से वन्दना प्रारम्भ होती है। ग्यारहवाँ मंदिर बड़े बाबा का है। इस मंदिर में 12 फुट 6 इंच की यह प्रतिमा पद्मासन पश्चिम मुख विराजमान है। कला की दृष्टि से 11वीं शताब्दी की दिखती है। चिह्न व प्रशस्ति नहीं होने से इसका नाम सरोवर के नाम के समान वर्द्धमान या महावीर प्रसिद्ध रहा। यहाँ के लेख के अनुसार 1757 में मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ। महाराजा छत्रसाल भी इसी समय आये। शुरू से ही यह विशाल व अच्छे रूप में बना ही नहीं।

बड़े बाबा के आसन (बैठक) का पाषाण दो खण्डों को जोड़कर बना है। गर्भगृह में परिवर्तन भी कई बार हुए हैं। दिवालें कोई व्यवस्थित नहीं हैं। दो मूर्तियाँ बड़े बाबा के आजू-बाजू कहीं मंदिर से लाई गई स्थापित हैं। शुभचन्द्रगणी ने जीर्ण-शीर्ण स्थिति देखकर जीर्णोद्धार कराया। ब्रह्मचारी नेमीसागर ने छत का काम पूरा किया। महाराजा छत्रसाल ने इस मंदिर, बड़े प्रवेश द्वार व सरोवर का भी जीर्णोद्धार कराया। 1979 में श्री साहू अशोककुमार जी के परिवार द्वारा भी अपनी ओर से जीर्णोद्धार हेतु सहायता की गई। मंदिर में 4 वेदी व छह शिला फलक पर भी मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। उस गर्भगृह में दर्शकों के लिये स्थान नहीं रहा, वहाँ प्रकाश भी नहीं है। यह शिला-फलक दीवारों पर लगे हैं। मंदिर के सामने चबूतरे पर पाषाण पर चरण चिह्न और सामने “कुण्डगिरौ श्रीधरस्वामी” लिखा हुआ होने से यह क्षेत्र सिद्धक्षेत्र एवं बड़े बाबा के सिर के दोनों ओर जटा होने से वे भगवान ऋषभनाथ घोषित हुए।

मंदिर के पीछे भी जीर्ण-शीर्ण स्थिति रही है। मंदिर का शिखर भी कोई अच्छा नहीं रहा। 1999 में जबलपुर-दमोह के भूकम्प का असर होने से बड़े बाबा का एक भाग डेढ़ इंच झुक गया। पश्चिम मुख, पाषाण एवं वास्तु दोष के

कारण व बाह्य दीवाल पर क्रेक के निशान देखे गये। 1976 से कुण्डलपुर में परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 5 बार चतुर्मास हुआ। आचार्यश्री ने लगभग 600 दिन भगवान के दर्शन किए होंगे। 1996 में आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के समक्ष नीचे प्रवचन हाल में विशाल सभा में नये मंदिर के निर्माण का निर्णय लिया गया। 1995 में साहूजी ने भी स्वीकृति दी थी। अहमदाबाद के वास्तुविद् सी.वी. सोमपुरा एवं गोंदिया (महाराष्ट्र) के वास्तुविद् आर. पच्चिकर के निर्देशन में बड़े बाबा के वर्तमान मंदिर के पास ही 100 फुट दूर नये मंदिर का पहाड़ी के नीचे 3 मार्च 1999 को शिलान्यास किया गया। नये स्थान को भूकम्परहित बनाने में 1 करोड़ का व्यय स्वाभाविक है। अतः भूमि खोदने आदि को देखकर विरोधी लोगों द्वारा दुष्प्रचार भी किया गया। मूर्ति के स्थानांतरण के विरोध हेतु मूर्ति में क्रेक आया, वह नष्ट हो जाएगी आदि की बातें सुनकर सर्वत्र दुष्प्रभाव पड़ा।

पुरातत्व विभाग की उच्च स्तरीय टीम ने अवलोकन कर मूर्ति में दरार के दावे को निरस्त कर दिया, यह समाचार 13 मई 2000 को जबलपुर के दैनिक भास्कर में प्रमुखता से प्रकाशित हुआ है।

बड़े बाबा की बैठक आदि से यह संकेत मिलता है कि मूर्ति पटेरा आदि कहीं से किसी व्यापारी द्वारा बैलगाड़ी में उसके स्वप्नानुसार लाई गई और यहाँ वर्तमान स्थान पर रुक गई। यहीं इनका मंदिर बना दिया गया। आततायी मुगल शासक द्वारा हथौड़े से प्रहार होने पर भी अपने अतिशय से मूर्ति सुरक्षित रही। सं. 1757 में महाराजा छत्रसाल आये और उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने से बड़े बाबा के मंदिर हेतु कुछ न कर विरोधी मुगल से युद्ध में विजय पाकर पीछे वहाँ सरोवर के घाट क्षेत्र, प्रवेश द्वार व इस बड़े बाबा के मंदिर के जीर्णोद्धार तथा उसी समय पंचकल्याणक के काम में सहयोग किया। यह सब लिखने का आशय यह है कि पुरातत्व विभाग का काम मूर्तियों की प्राचीनता की रक्षा करना है। यह बड़े बाबा का मंदिर प्राचीन बिल्कुल नहीं इसके सम्बन्ध में अपना कथित नकारात्मक रवैया छोड़कर नवनिर्माण हेतु समर्थन देना चाहिये। ऐसा अन्यत्र भी हुआ

है। मुरैना के बिचौलिया तथा श्री महावीर के शांतिमंदिर की मूर्तियों को पूर्वमंदिर नष्ट होने पर नये मंदिर में विराजमान किया गया।

पुरातत्त्व विभाग जैनमंदिर के विरोधी, लुटेरे, मुगल या अन्य मूर्तिनाशक आयें, तो उनसे भी रक्षा करने के लिये है। साधारण पाषाणमूर्ति और वास्तु स्थान को सूरिमंत्र व मंत्र विधान से भगवान व जिनालय का रूप देने वाले आचार्य परमेष्ठी की शुद्ध भावना से कराई गई या बताई गई इस योजना का विरोध करना क्या उचित है? क्षेत्र के ट्रस्टियों की भी इसमें कोई दुर्भावना नहीं है, किन्तु गलती यही है कि अपने चुनाव में हारे विरोधी को अनुकूल नहीं रखा। यह विशाल रूप से दुष्प्रचार इन्हीं का काम है।

बड़ी मूर्ति को संकुचित स्थान से सुरक्षित निकालने में जो प्राचीन नहीं था, वही टूटा। इसे शरारती-तत्त्वों द्वारा विरोध के रूप में अपराध बताया गया। नये मंदिर की भी टूट-फूट सदोष बताई गई। यह जैनों की परीक्षा का अवसर था। यदि नये मंदिर में मूर्ति स्थापित नहीं होती, तो जैन

हमेशा कायर ही बने रहते। यह पार्टीबन्दी का काम नहीं है, हमें उदारता से विचार करना चाहिए। वर्णीजी नहीं होते, तो जिनवाणी, संस्कृत, प्राकृत के महान् ग्रंथों व विद्वानों की यह स्थिति रहती? महात्मा गाँधी, गुरु गोविंदसिंह, आचार्य शांतिसागर जी आदि के समान आचार्य श्री विद्यासागर जी के सहयोग से नये मंदिर में बड़े बाबा की प्राचीन मूर्ति (मंदिर नहीं) की स्थापना से हम गौरवान्वित हो गए। “संस्कृति के मंच” के काम को हम अच्छा मानते हैं, पर यहाँ उन्हें श्री एन.के. सेठी (अध्यक्ष, तीर्थ रक्षा समिति) आदि के निवेदन को मानकर कुण्डलपुर देखना चाहिये। जैसा कि ‘दिशा बोध’ के सम्पादक डॉ. चिरंजीलाल जी बगड़ा जगह-जगह जाकर स्थिति देखते हैं और फिर छापते हैं, उन्होंने कुण्डलपुर की स्थिति को देखा और सन्तोष प्रकट किया। यह मैंने भा.दि. जैन तीर्थ रक्षा समिति की पुस्तक “मध्यप्रदेश” के आधार पर लिखा है।

40, सर हुकमचन्द मार्ग,  
मोती महल, इन्दौर

## बोधकथा

### बिना विवेक की नकल

एक किसान की दो पुत्रियाँ थीं। एक विधवा व दूसरी सधवा थी। इन दोनों में अत्यन्त प्रेम था। एक बार छोटी बहिन सरला (सधवा) अपनी बड़ी बहिन विमला (विधवा) के यहाँ पहुँची। उसने उसके स्वागत में बड़े हर्ष के साथ खाने के लिए अनेक मिष्ठान्तों के साथ ही गरम पूड़ी बनाई, उन्हें खाकर छोटी बहिन बड़ी प्रसन्न हुई व उनके बनाने की विधि भी दीदी से सभी प्रकार से समझ ली।

जब वह घर वापस आई, एक दिन उसने गरम पूड़ी बनाने को सब सामान मँगाया और बनाने लगी, परन्तु वैसी न बन सकी। इसका कारण उसके समझने में कोई भूल थी। पति ने समझाया कि तेरे बनाने में अवश्य कहीं कोई भूल रह गई है। फिर सरला ने सोचा कि बहिन विमला ने जब बनाई थी तब वे सफेद साड़ी पहने थीं, बाल भी कटे थे। तथा हाथों में कोई भी आभूषण नहीं था।

अतः मुझे भी वैसा ही करके पूड़ियाँ बनानी चाहिये। उसने उसी भाँति सिर मुँडायी, सफेद साड़ी भी पहिन ली व हाथों में पहने हुए आभूषण उतार दिये। पूड़ियों को पुनः बनाना आरम्भ किया, फिर भी पूड़ियाँ पहले अनुसार ही

बनीं, वे अच्छी बनती भी कैसे?

इसी समय पतिदेव भोजन करने आये। उन्होंने पत्नी की वेषभूषा को देखा और क्रोध से लाल होकर बोले- “अरी मूर्ख! मेरे होते हुए तू विधवा क्यों हो रही है?” वह बोली “मेरी बहिन ने तो इसी भेष में गरम पूड़ियाँ बनाई थीं, जो अति स्वादिष्ट बनी थीं।”

पति ने कहा- “पगली ! भेष बदलने से पूड़ियाँ बनाने का क्या सम्बन्ध? तू तो वैसा ही कर रही है कि जैसे कुछ लोग रत्नत्रय धर्म पाने के लिये देखा-देखी बाह्य क्रियाकाण्ड की नकल करते हैं।” किन्तु जो उसका उपाय तत्त्वज्ञान व तत्त्वनिर्णय है, उसे भलीभाँति समझने का यत्न नहीं करते। सच्ची विधि तो तत्त्वज्ञान और आत्मस्थिरता, रागद्वेषादि भावों में उपेक्षा एवं मोहजन्य परिणामों में विरक्तता है। उसके बिना धर्म की प्राप्ति कैसे संभव है? तत्त्वज्ञान के बिना कितने ही भेष बदलो, उससे अनन्त संसार के एक भी भव की कमी होना संभव नहीं है।

प्रस्तुति - सुशीला पाटनी  
मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)

मार्च 2006 जिनभाषित / 5

# कुण्डलपुर में बड़े बाबा के निर्माणाधीन मंदिर की यथार्थ स्थिति

वीरेश सेठ

श्री बड़े बाबा मंदिर निर्माण समिति, कुण्डलपुर ( जिला दमोह, म.प्र. )  
के प्रभारी श्री वीरेश सेठ द्वारा पत्रकार सम्मेलन में व्यक्त विचार।

विगत कुछ दिवसों से पूज्य बड़े बाबा, प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ भगवान् की प्रतिमा के स्थानान्तरण के सम्बन्ध में पुरातत्त्व विभाग के कुछ अधिकारियों के लगातार असत्य बयान तथा दमोह जिला प्रशासन के मुखिया के द्वारा पुरातत्त्व विभाग की वास्तविकता की जानकारी लिए बिना ही संपूर्ण भारतवर्ष में फैले 2 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं एवं अहिंसात्मक विचारधारा के समर्थकों पर तरह-तरह के अर्नगल, मिथ्या आरोप लगाये जा रहे हैं।

मैं वीरेश सेठ, प्रभारी-श्री बड़े बाबा मंदिर निर्माण समिति बड़े ही सम्मान के साथ यहाँ उपस्थित सभी सम्माननीय पत्रकार बंधुओं, प्रिंट मीडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के समक्ष सन् 1871-72 से लेकर आज दिनांक 28 जनवरी 2006 तक 135 सालों की वास्तविकता, इस पुरातत्त्व विभाग के सम्माननीय अधिकारियों द्वारा समय-समय पर जैन तीर्थ क्षेत्र कुण्डलपुर के सम्बन्ध में पूज्य श्री 1008 बड़े बाबा की प्रतिमा जी अथवा मंदिर के सम्बन्ध में, यहाँ तक कि उनके द्वारा, वास्तव में संरक्षित अंबिकादेवी-मठ के सम्बन्ध में, किये गये सर्वे, पत्राचार, नोटीफिकेशन, तत्कालीन जिला प्रशासन प्रमुख, आदि के द्वारा कुण्डलपुर जी के सम्बन्ध में, वहाँ की एक मात्र समिति जो समय-समय पर जैनधर्म के अनुयायियों के द्वारा मनोनीत अथवा लोकतांत्रिक पद्धति से निर्वाचित होती आ रही है के साथ किया गया पत्राचार उसकी सारी जानकारी जो हमारे पास प्रमाण के साथ उपलब्ध है, आपके समक्ष बिन्दु बार प्रस्तुत है -

पुरातत्त्व विभाग अब यह बता रहा है कि 16/07/1913 को चीफ कमिश्नर सेन्ट्रल प्रावीजन्स नागपुर द्वारा प्रकाशित अधिसूचना के तहत कुण्डलपुर के 1 से 58 जैन मंदिर केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग के संरक्षण में ले लिये गये थे, जिसके संदर्भ में बड़ा ही स्पष्ट है कि उस नोटीफिकेशन में सिर्फ यह लिखा है Jain Temples on The Hill, इससे न यह पता चलता है वे कौन से मंदिर हैं, उनका क्या क्रमांक है और उनकी कितनी संख्या है? यदि वे पुरातत्त्व के संरक्षित

स्मारक थे, तो उनकी चारों दिशाओं, उनके नाप-तौल, उनके निषिद्ध क्षेत्र के विवरण के साथ इस विभाग की नीले रंग की पट्टिका व विभाग के चौकीदार सुरक्षा हेतु होने चाहिए थे किन्तु आज की तारीख तक इस विभाग ने वहाँ पर न कोई अपने संरक्षण की सूचना लगायी है, न ही कोई कर्मचारी, चौकीदार की ड्यूटी लगायी है, न एक पैसे की राशि, इन मंदिरों की सुरक्षा, संरक्षण, देख-भाल, निर्माण अथवा जीर्णोद्धार के नाम पर खर्च की, क्योंकि यह विभाग इस बात को अच्छी तरह जानता था कि कुण्डलपुर में जो आज मंदिर बनें हैं वे उनके संरक्षित स्मारक नहीं हैं। इस विभाग के द्वारा पिछले 100 सालों में देश की स्वतंत्रता से लेकर आज तक जो भी पैसा खर्च किया गया, किसी भी कर्मचारी की कुण्डलपुर में नियुक्ति की गई या किसी स्मारक को संरक्षित किया गया वह सिर्फ कुण्डलपुर पहाड़ी की तलहटी में बने हुए अंबिकादेवी-मठ में ही किया गया और वह इसलिये भी सत्य है कि कुण्डलपुर क्षेत्र में दिगम्बर जैन समाज के बने हुए सारे के सारे जैन मंदिर 15 वीं से 19 वीं सदी के मध्य के हैं, वे मंदिर उस दरम्यान जो निर्माण में सामग्री उपयोग होती थी, उसके बने हैं, मंदिरों का आर्किटेक्ट उस समय का प्रचलित आर्किटेक्ट है। इन मंदिरों के निर्माता जैन समाज के दानदाता लोग रहे हैं। किस समय किस मंदिर का निर्माण हुआ, किन व्यक्तियों ने उन्हें बनवाया, मंदिर में किन तीर्थंकर भगवान की मूर्ति है, कितनी मूर्तियाँ हैं, उन मूर्तियों की पाद-पीठिका पर, प्रशस्ति में उन दानदाताओं, प्रतिष्ठाचार्यों के नाम खुदे हुये हैं, जिसका कि पूरा का पूरा प्रामाणिक रिकार्ड हमारे पास उपलब्ध है। इसकी भी प्रमाणित प्रतिलिपि इस विज्ञप्ति के साथ संलग्न है। (क्रमांक 2)।

पुरातत्त्व विभाग जिन मंदिरों को 6वीं-7वीं शताब्दी का कहता है, वह सिर्फ पहाड़ों की तलहटी में बना हुआ अंबिका देवी का मठ है। उसका आर्किटेक्ट, उसमें उपयोग की गयी सामग्री 6वीं-7वीं शताब्दी की है। और इस बात का प्रमाण मौके पर उपलब्ध है। इस विभाग के द्वारा स्वतंत्रता के पूर्व



1871-72 में Archaeological Survey of India के Asst. Archaeological सर्वे Z.D. Begler की बुन्देलखंड एवं मालवा के दौर की विस्तृत रिपोर्ट जो इनके तत्कालीन कोलकाता आफिस से प्रकाशित हुई थी, उसमें भी बताया गया है। (अंबिका मठ का चित्र व Z.D. Begler की रिपोर्ट क्रमांक 3 और 4 संलग्न)।

इसे एक विडम्बना ही माना जायेगा कि कुण्डलपुर में एक मात्र संरक्षित स्मारक, जिसकी सुरक्षा पर ही इन्होंने अपने चौकीदार नियुक्त किये, विभाग का पैसा खर्च किया और उसकी ही सुरक्षा नहीं कर सके, यहाँ तक कि आज उससे 100 मीटर के निषिद्ध क्षेत्र, प्रतिबंधित क्षेत्र जिसकी ये बात करते हैं वहाँ पर उस क्षेत्र में 4-4 समाधि के चबूतरे, नल व खनन आदि हो चुके हैं, क्या कभी इस विभाग ने किसी को भी नोटिस दिये? प्रशासन से इन गतिविधियों के लिए रोक माँगी? और तो और इस विभाग की एक सच्चाई यह भी है कि कुण्डलपुर में 6वीं शताब्दी के एक नहीं, दो मंदिर थे और वे दोनों ही केन्द्रीय स्मारक संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत भोपाल सर्किल की सुरक्षा में थे तथा भोपाल मंडल के अंतर्गत संरक्षित स्मारकों की सूची के क्रमांक 49 (संलग्न 5) में थे तथा भारतसरकार के दमोह जिले के गजट के पृष्ठ क्रमांक 384 (संलग्न 6) में यह बात स्पष्ट रूप से सामने आयी है कि कुण्डलपुर में 6वीं-7वीं सदी के केवल दो ही मंदिर थे जो सिंगल स्लेब व फ्लेट रूप पैटर्न के बने थे, उनमें से एक मंदिर खाली व दूसरे मंदिर में शायद विष्णु भगवान थे। आज मौके पर एक मंदिर है और एक दूसरा मंदिर कहाँ गया यह विभाग बताये?

अचानक आज बड़े बाबा के मंदिर की प्रतिमा के स्थानान्तरण को लेकर यह विभाग इतना बड़ा बवाल खड़ा कर रहा है। मैं बड़े सम्मान के साथ सारे पत्रकार जगत को, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को बताना चाहता हूँ कि बड़े बाबा की मूर्ति को पुराने मंदिर से निकालकर नये निर्माणाधीन मंदिर में स्थानान्तरण की आवश्यकता क्यों पड़ी? पुराना मंदिर पूर्णतया जीर्णशीर्ण हो गया था, विगत 12 वर्षों में इस क्षेत्र में आये भूकम्प के प्रभाव एवं काल के प्रभाव से मंदिर के मण्डप में बड़े-बड़े क्रेक आ गये थे। मंदिर के नीचे कोई भी नींव नहीं थी, बल्कि Mud Rocks का क्षेत्र था, जिसे भूगर्भ-शास्त्रियों ने Week Zone Area का क्षेत्र बताया था। 1999 में जब पुरातत्त्व विभाग के द्वारा समिति के बार-बार

निवेदन के बावजूद भी मंदिर की सुरक्षा व बड़े बाबा की मूर्ति की सुरक्षा के लिये कोई कदम नहीं उठाया गया, तब समिति के द्वारा उस पूरे Mud Rocks क्षेत्र जिसे भूगर्भशास्त्रियों ने वीक जोन बताया था, के चारों तरफ 15 से 20 मीटर गहरे 100mm व्यास के 657 छिद्र बोर कराकर पियोर सीमेंट ग्राउट कराई गई थी। उसके बावजूद भी बड़े बाबा की मूर्ति अपने मूलस्थान से 3से.मी. झुक गयी, इसकी भी जानकारी इस विभाग को थी। ग्राउटिंग की विस्तृत रिपोर्ट (संलग्न क्रमांक 9) तथा इन सारी बातों की जानकारी समिति के द्वारा लगातार पिछले कई वर्षों से पुरातत्त्व विभाग के अधिकारियों को दी जा रही थी और निवेदन किया जा रहा था कि शीघ्र ही 6वीं एवं 7वीं शताब्दी के मध्य की इस विशाल जैन प्रतिमा की, जो भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में फैले हुए करोड़ों जैन अनुयायियों के आस्था का केन्द्र बिन्दु है, रक्षा की जाये, यहाँ तक कि इसी विभाग के भोपाल मंडल के एक बड़े अधिकारी ने अपनी कुण्डलपुर बड़े बाबा मंदिर निरीक्षण की एक विस्तृत रिपोर्ट दी थी (संलग्न क्रमांक 7), जिसमें स्वीकार किया गया था कि बड़े बाबा का मंदिर 80 प्रतिशत नष्ट हो चुका है। उसमें सघन जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। अपने विभाग की इतनी गंभीर जाँच रिपोर्ट के बावजूद भी यह विभाग शायद उस दिन का इन्तजार कर रहा था कि बचा हुआ बाकी 20 प्रतिशत हिस्सा कब बड़े बाबा की मूर्ति पर गिर जाये और 6वीं-7वीं शताब्दी की, करोड़ों जैन अनुयायियों के आस्था के केन्द्र बिंदु भगवान ऋषभदेव बड़े बाबा की प्रतिमा नष्ट हो जाय।

आज जब बड़े बाबा की मूर्ति का स्थानान्तरण किया गया, तो इस विभाग ने इतना बड़ा बवाल खड़ा कर दिया! क्या उसके पास इस बात का कोई जबाव है कि 1913 से आज 2006 तक समिति के द्वारा बड़े बाबा के पुराने मंदिर का कई बार जीर्णोद्धार कराया गया, यहाँ तक कि 1975-76 में बड़े बाबा के मंदिर का ऊपर का शिखर पूरी तरह से ढह गया था तब तत्कालीन अखिल भारतीय जैनतीर्थ रक्षा समिति के अध्यक्ष प्रमुख उद्योगपति साहू श्रेयांसप्रसाद जी के सहयोग से समिति के द्वारा बड़े बाबा के गर्भगृह पर सीमेंट, लोहा क्रांकीट के एक विशाल शिखर का निर्माण कराया गया था, यह कार्य तीन वर्ष तक लगातार चलता रहा, उस समय भी इस विभाग ने कोई आपत्ति नहीं की थी, क्योंकि यह विभाग अच्छी तरह से जानता था कि बड़े बाबा की मूर्ति ही 6वीं

7वीं शताब्दी की है, यह मंदिर सिर्फ 150-200 साल पुराना है, इसमें पुरातत्त्व का कोई तत्त्व नहीं है, जिसका उल्लेख आर्केलॉजीकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्ट द सेन्ट्रल प्रॉवीजन्स 1873-74 के पृष्ठ क्रमांक 58 (संलग्न क्रमांक 4) में भी वर्णित है, इसलिए कोई आपत्ति नहीं की गई।

अहिंसात्मक जैन समाज ने हमेशा कानून का अक्षरशः पालन किया है व हमेशा करता रहेगा। समिति के द्वारा दिनांक 05/01/06 को श्री के. के. मोहम्मद, अधीक्षक केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग भोपाल मण्डल को उनके भोपाल स्थित कार्यालय में जाकर श्री बड़े बाबा जी की मूर्ति के नये मंदिर में स्थानांतरण की अनुमति बावत एक 5 पेज का विस्तृत पत्र (संलग्न क्रमांक 8) भी दिया था, जिस पर माननीय के. के. मोहम्मद साहब से विस्तृत चर्चा भी हुई थी तथा उनसे विगत लम्बे समय से इस सम्बन्ध में हो रहे पत्राचार, उन पर विभाग की अनदेखी तथा स्थानान्तरण शीघ्र अनुमति बावत निवेदन भी किया था, किन्तु इस सब के बावजूद दिनांक 15 जनवरी 06 को दमोह जिले के माननीय कलेक्टर महोदय संपूर्ण शासकीय अमले, पुलिस फोर्स तथा पुरातत्त्व विभाग के अधिकारी, जिनका स्थानान्तरण हो चुका था, सबको साथ लेकर कुण्डलपुर पहुँच गये। कुण्डलपुर जी में 5 करोड़ 51 लाख मंत्रों की जाप का अनुष्ठान चल रहा था। इन जापों का अनुष्ठान पूर्व में पूरे भारत वर्ष में जैन समाज के द्वारा भिन्न-भिन्न पूजा स्थलों पर लम्बे समय से जारी था। उसी की कड़ी में यह जाप अनुष्ठान कुण्डलपुर में आयोजित था। माननीय कलेक्टर महोदय ने वहाँ पर उपस्थित जैन समुदाय के समक्ष एक भय का वातावरण निर्मित कर दिया, उन्होंने हमारे धर्म गुरु, आचार्यों के प्रति अमर्यादित भाषा का उपयोग किया। यहाँ तक कि पूरे कुण्डलपुर क्षेत्र में पैरामिलेट्री फोर्स को नियुक्त कर देने की बात कही। उपस्थित जैन समुदाय जो जाप अनुष्ठान में अपनी धार्मिक भावनाओं के साथ पूज्य बड़े बाबा से विश्वशांति की मनोकामना कर रहा था, कलेक्टर महोदय के द्वारा निर्मित वातावरण से घबरा गया। यह समाचार आग की तरह पूरे हिन्दुस्तान में फैल गया। रातों-रात बड़े बाबा के प्रति आस्था रखनेवाली महिलाओं, पुरुषों, बच्चों और बुर्जुगों का बहुत बड़ा सैलाब कुण्डलपुर में एकत्रित हो गया और बड़े बाबा जी की प्रतिमा पुराने मंदिर से निकाल कर नये मंदिर में स्थापित कर दी गई। यह भी एक चमत्कार था कि बड़े बाबा को जैसे ही पुराने मंदिर से निकाला गया पुराना मंदिर स्वयमेव धराशायी

हो गया, शायद इसी का पुरातत्त्व विभाग वर्षों से इन्तजार कर रहा था। बड़े बाबा की मूर्ति के स्थानान्तरण के बाद पुरातत्त्व विभाग ने एक और नया दुष्प्रचार करना शुरू किया कि बड़े बाबा की मूर्ति के 12 टुकड़े कर दिये गये हैं तथा इतने बड़े षडयंत्रकारी झूठ को पूरे भारतवर्ष में प्रचारित किया जा रहा है। मैं आपको जो सीडी उपलब्ध करा रहा हूँ, उसमें बड़े बाबा की पुराने स्थान की पूरी फोटो ग्राफी बारीकी से प्रस्तुत की गई है, जिसमें बहुत ही स्पष्ट है कि बड़े बाबा की मूर्ति की क्या स्थिति थी। श्री बड़े बाबा मंदिर निर्माण समिति को आप सभी को आमंत्रित कर इस सच्चाई को प्रमाण के साथ बतलाने तथा सत्य को पूरे भारतवर्ष में प्रसारित करने के लिए यह वार्ता आयोजित करनी पड़ी है। पुरातत्त्व विभाग जिस मूर्ति के संरक्षण की बात करता है, उसे यह भी नहीं मालूम कि बड़े बाबा की मूर्ति सिर्फ एक शिला में थी तथा पुराने मंदिर में पीछे की दीवार में बड़े बाबा के चारों ओर लगी अन्य मूर्तियाँ व नीचे का सिंहासन सभी अलग-अलग समय में पत्थरों पर बनाकर पीछे की दीवार में लगायी गयीं थी तथा वे निम्नानुसार रही हैं- मध्य में बड़े बाबा की प्रतिमा, दायें और बायें 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान की खड्गासन प्रतिमायें (नग 2), बड़े बाबा के उपर 1 पत्थर का छत्र, बड़े बाबा के कन्धे की ऊँचाई के दोनों तरफ दो पुष्पवृष्टि, बड़े बाबा के पद्मासन के दोनों तरफ दो चँवरधारी, नीचे का सिंहासन में जो (Random Rubble) मैसेनरी का बना था, क्लेडिंग किये हुए भगवान ऋषभदेव के गौमुखी यक्ष एवं चक्रेश्वरी देवी तथा दो सिंह की आकृतियाँ थीं, जो बड़े बाबा के चारों तरफ उनके परिकर के रूप में जैन मान्यताओं के अनुसार लगायी गयी थीं। प्रमाण स्वरूप मैं आपको बड़े बाबा के स्थानांतरण के पूर्व के फोटो ग्राफ तथा वर्तमान में बड़े बाबा के नये मंदिर गर्भालय के फोटो ग्राफ भी प्रस्तुत कर रहा हूँ तथा इसी गर्भालय में बड़े बाबा का पूरा का पूरा परिकर पूर्व की तरह ही शोभायमान होगा।

साथियो, यहाँ यह भी बताना बहुत आवश्यक है कि पुरातत्त्व विभाग के द्वारा संस्कृति की रक्षा करने का जो दावा किया जा रहा है, वास्तविकता में वह कार्य कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्र में बड़े बाबा के विशाल मंदिरनिर्माण द्वारा किया जा रहा है। बड़े बाबा का नया भव्य निर्माणाधीन मंदिर वंशी पहाड़पुर पत्थर पर अनूठी नक्काशी के साथ 171 फीट ऊँचाई का शिखर, 2 विशाल गुण व नृत्य मंडप, अक्षरधाम की तर्ज पर

निर्मित हो रहे हैं, जिसे देखकर वहाँ पर पहुँचने वाले हजारों-हजार तीर्थयात्री, बुद्धिजीवी, विद्वान् भी प्रशंसा करते हुए यह कहते हैं कि बड़े बाबा की प्रतिमा जी के संरक्षण का असली काम तो अब हो रहा है। बड़े-बड़े वास्तुविदों ने इस निर्माणाधीन मंदिर को महाप्रसाद का नाम दिया है।

बंधुओ, हमारी समिति आपसे विनम्र निवेदन करती है कि आप लोग कुण्डलपुर पहुँचकर अपनी आँखों से सच्चाई को देखें, जानें व स्वयं निर्णय करें कि जैन समाज ने अथवा समिति ने जो बड़े बाबा के नये मंदिरनिर्माण का बीड़ा उठाया है, वह कितना सही है। अभी तक के हुए निर्माण कार्य में संपूर्ण भारतवर्ष से जैन धर्मावलंबियों से प्राप्त दान राशि से 10 करोड़ रुपये खर्च किये जा चुके हैं। 1995 से लगातार निर्माण का कार्य जारी है तथा यह भी एक सत्य है कि इस विभाग के अधिकारियों की पूर्ण जानकारी में यह कार्य हो रहा है। यही नहीं, वे यह भी कहते थे कि हम

आपको लिखित में सहमति नहीं दे सकते, किंतु बड़े बाबा के संरक्षण के लिए नये मंदिर का निर्माण कार्य अपरिहार्य है।

मैंने जो भी तथ्य आपके सामने रखे, वे मेरी जानकारी से पूर्णतः सत्य हैं। प्रमाण के तौर पर सभी दस्तावेज, फोटो ग्राफ भी उपलब्ध हैं। मेरी भावना किसी को ठेस पहुँचाने या नीचा दिखाने की नहीं है। सिर्फ विगत दिवसों में भ्रान्त प्रचार के माध्यम से जो वातावरण को दूषित किया गया, जिला प्रमुख के गैर जिम्मेदाराना आचरण से भारतवर्ष में साम्प्रदायिक सौहार्दता को बिगाड़ने का जो प्रयत्न किया गया उसके निराकरण हेतु ये सारी बातें आपके समक्ष रखना आवश्यक हो गईं।

धन्यवाद

प्रभारी

श्री बड़े बाबा मंदिर निर्माण समिति  
कुण्डलपुर, जिला दमोह ( म.प्र. )

## पुरातत्त्व कानून पर पुनः गौर कीजिये

सुभाष चन्द्र 'सरल'

देश में अनगिनत पुरा सम्पदायें,  
जगह-जगह खड़ी हैं।  
पर दम तोड़ती सी बिखरी पड़ी हैं।  
हमारी सरकार उनका संरक्षण नहीं  
कर पा रही है,  
पर संरक्षण की भावना रखने वाले,  
अनुयायियों के आड़े आ रही है,  
हजारों देव प्रतिमाओं का  
क्षरण हो रहा है।  
चोरी हो रही है, या मरण हो रहा है।  
हजारों मन्दिर गिर गये हैं  
या गिरते जा रहे हैं,  
या उचित रखरखाव के अभाव में  
टूटते जा रहे हैं,  
सरकार के पुरातत्त्व संरक्षण कर्ताओं से,  
संरक्षण नहीं हो पा रहा है।  
सरकार के बजट का अधिकतम,

वेतन में खर्च हो रहा है।

अतः आप जितना संभाल सकें, उतना सँभालिये  
पर प्रजातंत्र में देवों के अनुयायियों के,  
संरक्षण कार्य एवं नवनिर्माण में,  
आड़े मत आइये।

कृपया अपनी सरकार के पुरातत्त्व संरक्षण कानून पर,  
महामहिम जी, प्रधान जी पुनः गौर कीजिये।  
और जिन पुरा देव प्रतिमाओं के अनुयायी,  
संरक्षण को तत्पर हैं  
उन्हें संरक्षण एवं आवश्यक नवनिर्माण के  
अधिकार दीजिये।

जहाँ अनुयायी संरक्षण कर्ता न बनें,  
आप पूरी जिम्मेदारी से उनको सँभालिये।  
पर, लोकतंत्र में न करेंगे, और न करने देंगे की,  
नीति मत पालिये।

भोला फोटो स्टूडियो,  
सुभाषगंज अशोकनगर ( म.प्र. )



# जैन संस्कृति रक्षा मंच जैनत्व की चिंता क्यों नहीं कर पाया?

निर्मल कुमार पाटोदी

बुन्देलखण्ड का तीर्थराज कुण्डलपुर प्रथम तीर्थकर आदिनाथ भगवान बड़े बाबा का चमत्कारी दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र है। सन् 1998-99 में संबंधित विशेषज्ञों के दल ने मंदिर की जीर्ण-शीर्ण हालत से उत्पन्न खतरे के प्रति सचेत किया था। वास्तुविद् सी.वी. सोमपुरा ने वर्तमान में वायव्यमुखी बड़े बाबा की इस प्रतिमा को पूर्व या उत्तरमुखी करके वास्तुदोष दूर करने की अनिवार्यता पर भी बल दिया था। विशेषज्ञों के सुझावानुसार प्रबंधकारिणी समिति ने आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त कर प्राचीन भारतीय पंचायतन शैली के अनुरूप पाषाण निर्मित हजार साल से भी अधिक आयु वाला, भूकम्प के झटके सहने में समर्थ, बिना सीमेंट और लोहे के उपयोग के भव्य मंदिर निर्माण का प्रस्ताव किया, जो सन् 1999 में कुण्डलपुर में आचार्य श्री की उपस्थिति में विशाल धर्मसभा में निर्विरोध स्वीकार हुआ। देश के जाने-माने प्रतिष्ठाचार्य संहितासूरी पण्डित नाथूलालजी शास्त्री, इन्दौर से शास्त्रसम्मत परामर्श करके उनकी उपस्थिति में नये मंदिर का शिलान्यास किया गया। तब से बड़े बाबा की मूर्ति व साथवाली जैन प्रतिमाओं का संरक्षण अनिवार्य हो जाने से नये मंदिर का निर्माण प्रारंभ करना पड़ा।

## घर को आग लगा दी घर के चिरागों ने

समाज की धरोहर के रक्षार्थ किये जा रहे भव्यनिर्माण को विवाद का रूप समाज के एक अस्तित्वहीन, आधारहीन जैन संस्कृति रक्षा मंच ने पिछले दिनों दे दिया है। इस संस्थान ने अब तक कितने नव-निर्माण किये हैं? कितने तीर्थक्षेत्रों के पुरातत्त्व की रक्षा की है? कितनी धनराशि तीर्थ क्षेत्रों पर खर्च की है? इस तीर्थ रक्षा की संस्था ने अपने उद्देश्यों के अनुरूप गठन से लेकर अब तक कितना सकारात्मक योगदान दिया है? ऐसी जानकारी पूरे देश के जैन समाज में न कभी प्रचारित की गई और न ही प्रसारित की गई। सिर्फ संस्था के शीर्ष पत्र पर छपे महानुभावों के नामों व उनके प्रभावों को भुनाने का कार्य ही संभवतः संस्था के पदाधिकारियों ने किया है? जो स्वयं कुछ रचनात्मक योगदान नहीं दे सके हैं, उन्होंने कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र पर धर्मायतन की रक्षार्थ किये जा रहे धार्मिक निर्माणकार्यों की प्रबंधकारिणी समिति से सम्पर्क करके न जानकारी प्राप्त

की न निर्माण कार्यों का अवलोकन किया। इसके विपरीत राष्ट्र के महान् संत गुरुवर विद्यासागर जी महाराज को अप्रत्यक्ष बदनाम करने का प्रयास किया है। निर्माण कार्यों के खिलाफ न्यायालय के माध्यम से अवरोध उत्पन्न किया है। समाज में विवाद की सोचनीय स्थिति उत्पन्न की है। जिस संस्था को दिगम्बर जैन महासमिति के समान भारत सरकार ने समाज के प्रतिनिधि के रूप में मान्यता नहीं दी, उसने कुण्डलपुर क्षेत्र के भव्य निर्माण कार्यों को जहाँ प्राचीन मूर्तियों का संरक्षण किया जाने वाला है, रुकवाने का अवांछनीय कार्य किया है। ऐसी संस्था के रजिस्ट्रेशन का समाजहित में क्या औचित्य है? आचार्य मेरूभूषण जी महाराज ने इस जैन संस्कृति रक्षा मंच के प्रमुख पदाधिकारियों को गिरनार जी सिद्धक्षेत्र मामले में उच्च न्यायालय में चल रहे प्रकरण में पक्षकार बनने का पत्र लिखा था, किंतु कुछ नहीं किया गया। क्या जैन संस्कृति रक्षा मंच के पदाधिकारीगण अपना स्पष्टीकरण देंगे? उन्होंने श्री गिरनारजी तीर्थ राष्ट्रस्तरीय-एक्शन-कमेटी के कार्यों की हर संभव आलोचना की, असहयोग किया। केसरियाजी, पावापुर, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ, पावागढ़, सम्मेदशिखर जी तीर्थों के अस्तित्व पर आये संकट के निवारण के लिये समाज को बताया जायेगा कि जैन संस्कृति रक्षा मंच वालों ने क्या कुछ किया?

कुण्डलपुर जैसे निर्माणकार्य पूर्व में भी राजस्थान के अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में नवनिर्माण करके किये गये हैं। श्री महावीर जी जैसे प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र में महावीर भगवान की अतिशयकारी प्रतिमा जहाँ से निकली, उसे भी उसी स्थल के बजाय अन्यत्र विराजित किया गया है। यह बात समूचा जैन समाज जानता है। सपने में भी नहीं सोचा जा सकता है कि जैन धरोहर के संरक्षक आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज तथा धर्म क्षेत्र कुण्डलपुर की प्रबंधकारिणी बड़े बाबा भगवान ऋषभनाथ जी व अन्य मूर्तियों जैसी धरोहरों को कभी क्षति पहुँचाने की सोच भी सकते हैं।

## पुरातत्त्व विभाग कुण्डलपुर में अपना योगदान बतावे

भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग को हमारे समाज के जैन संस्कृति के इन तथाकथित धर्मरक्षकों ने ही शिकायत करके सक्रिय किया है, मजबूर किया है। कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र

में पुरातत्त्व विभाग ने पुरातत्त्व स्मारक सम्बन्धी आज तक कोई सूचना व जानकारी प्रदर्शित नहीं की है। समाज के इस धर्मक्षेत्र पर तथा बड़े बाबा का मंदिर जीर्ण-शीर्ण होते जाने पर भी पुरातत्त्व विभाग, वन विभाग व अन्य शासकीय विभागों की हमारे धर्मक्षेत्र के विकास, संरक्षण, संवर्धन में कभी कोई भूमिका नहीं रही, न ही पुरातत्त्व विभाग ने अब तक खर्च किये गये दस करोड़ रुपयों के निर्माण कार्य को रोकने की पहल की है, जो कि छिपाकर चुपचाप किया जाना असंभव था।

ऐसी दशा में समाज के सभी संस्थाओं व महानुभावों को जैन संस्कृति रक्षा के नाम पर अवरोध उत्पन्न करने वाले नकारात्मक चेहरों को पहचानना होगा तथा उनका बहिष्कार करना होगा। भारतसरकार के पुरातत्त्वविभाग, प्रधानमंत्री जी,

राष्ट्रपति जी, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री जी को पत्र भेजकर माँग करना होगी कि धर्मक्षेत्र कुण्डलपुर के संरक्षण, संवर्धन, विकास सम्बन्धी कार्य करने का अधिकार प्रबंधकारिणी समिति को हस्तान्तरित किये जायें, जैसे कि माउंटआबू, राजस्थान, देलवाड़ा के जैन मंदिरों के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास कार्य के अधिकार वहाँ की समाज को हस्तान्तरित किये गये हैं। ऐसा प्रावधान भारतीय पुरातत्त्व अधिनियम में है भी तथा यह अनुभव के आधार पर न्याय का तकाजा भी है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के अन्तर्मन से उपजी यह भावना सबके गले उतरने योग्य है कि पुरातत्त्व विभाग को पुरातत्त्व की चिंता है, हमें पूरे तत्त्व की।

22, जॉय बिल्डर्स कॉलोनी, इन्दौर-452003

## घनिष्ट मित्रता

बेला जैन

1.

मैत्री वही घनिष्ट है, जिसमें दो अनुरूप।  
आत्मा को अर्पण करें, सखा को रुचिरूप॥

2.

बुध सम्मत वह मित्रता, जिसमें यह बर्ताव।  
स्वाश्रित दोनों पक्ष हों, रखे न साथ दबाव ॥

3.

मित्र वस्तु पर मित्र का, दिखे नहीं कुछ स्वत्व।  
तो मैत्री किस मूल्य की, और रखे क्या तत्त्व ॥

4.

बिना लिये ही राय कुछ, कर लेवे यदि मित्र।  
तो प्रसन्न होता अधिक, सचमुच गाढ़ा मित्र ॥

5.

कष्ट मिले यदि मित्र से, तो उसका भावार्थ।  
या तो वह अज्ञान है, या मैत्री सत्यार्थ ॥

6.

एक हृदय सन्मित्र का, सच्चे तर्जें न साथ।  
नाश हेतु होवे भले, चाहे उसका साथ ॥

7.

जिस पर चिरकाल से, मन में अति अनुराग।  
कर दे यदि वह हानि तो, होता नहीं विराग ॥

8.

मित्र नहीं सन्मित्र पर, सहता दोषारोप।  
फूले उस दिन मित्र जब, हरले अरि आरोप ॥

9.

चिर मित्रों के साथ भी, शिथिल न जिसका प्रेम।  
ऐसे मानव रत्न को, अरि भी करते प्रेम ॥

म. नं. 16, गाँधी चौक,  
नसीराबाद ( राज. )

## चिंता पुरातत्त्व से बढ़कर पूरे तत्त्व की कीजिये

निर्मल कुमार पाटोदी

“जहाँ आकर सात्त्विक भाव जागृत हों, व्यक्ति परमार्थ की ओर मुड़े, आत्म कल्याण की ओर उन्मुख हो, वह क्षेत्र तीर्थ होता है। कोई क्षेत्र तीर्थ बनता है तब, जब अनेक भव्य जीवों ने वहाँ साधना की होती है, तो उनकी तप-प्रभावना का आरोप उस क्षेत्र पर हो जाता है। यह कुण्डलपुर में और अत्यधिक मात्रा में विद्यमान है। बड़े बाबा की महिमा को शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता, शब्दातीत हैं ‘वे’।” यह मत कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र के बारे में आचार्य श्री विद्यासागर जी का है।

भारत के हृदयस्थल मध्यप्रदेश के सागर संभाग का एक जिला दमोह है। इस जिला मुख्यालय से लगभग 35 कि.मी. दूर पटेरा तहसील में, बुन्देलखण्ड का ‘तीर्थराज’ कुण्डलपुर है, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान का चमत्कारिक स्थान। प्राकृतिक सुषमा की आनंदमयी गोद में कुण्डलाकार पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित ऊँचे-ऊँचे जिनालयों वाला यह सिद्धक्षेत्र जैनधर्म की कीर्ति पताका फहरा रहा है।

भारत की 6वीं शती की प्राचीनतम तथा विशालतम लाल बलुआ पत्थर की पद्मासन, 15 फुट ऊँची, इस भव्य आदिनाथ भगवान की प्रतिमा के दर्शन को श्रद्धा से भरपूर जैन-अजैन, बाल-अबाल, स्त्री-पुरुष, भक्तजन खिंचे चले आते हैं। दर्शन करके जयकारा करने से, भाव-विभोर भक्तों की भक्ति साकार हो जाती है। मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। बड़े बाबा की मनोहारी मूर्ति के कारण कुण्डलगिरि ख्यात है। सत्रहवीं शती के अंतिम वर्षों में इस क्षेत्र के किसी ग्रामीण को इस प्रतिमा के धड़ और शिर दिखाई दिये थे। उस समय दिगम्बर जैन परम्परा के भट्टारक मुनि श्री सुरेन्द्र कीर्ति जी अपने शिष्यों व संघ सहित विहार करते हुए इस क्षेत्र में ठहरे थे। आहार से पूर्व देवदर्शन का भट्टारक जी का नियम था। दो दिन-दो रात तक भगवान के दर्शन बिना वे निराहार रहे। तब किसी ने इस प्रतिमा की जानकारी भट्टारक जी को दी थी और वे देवदर्शन हेतु भगवान की प्रतिमा स्थल तक पहुँच कर दर्शन का संकल्प पूर्ण कर सके तथा आहार ग्रहण कर पाये। जीर्णोद्धार के लिए भट्टारकजी ने वहीं चतुर्मास किया। यह विवरण मंदिर के जीर्णोद्धार-सम्बन्धी देवनागरी लिपि तथा संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण 1700 ई. के यहाँ स्थित शिलालेख में है।

कुण्डलपुर के बड़े बाबा की वेदी के बाहर अंतिम केवली श्रीधर स्वामी की निर्वाण स्थली होने के कारण यह स्थान सिद्धक्षेत्र है। ईसा से छह शताब्दियों पूर्व भगवान महावीर का समवशरण इस स्थान पर आया था। संभवतः बड़े बाबा के मूल मंदिर का निर्माण लगभग छठवीं शती में हुआ होगा। कुण्डलपुर के विषय में प्रथम विधिवत् जानकारी कुण्डलपुर नामक पुस्तक (1949) में लिपिबद्ध की गयी है। इस पुस्तक के वर्ष 1963 के संस्करण में प्रथम बार बड़े बाबा की पहचान भगवान आदिनाथ के रूप में की गयी। इसके पहले तक कुण्डलपुर के बड़े बाबा की प्रतिमा को भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा के रूप में पहचाना गया था।

सन् 1997-98 में विशेषज्ञों के दल ने मंदिर की जीर्ण-शीर्ण अवस्था को देखते हुए जो खतरा उत्पन्न हो गया था उसके आधार पर सुझाव दिया था कि आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए पहाड़ में ग्राउंटिंग करके, मंदिर का स्थान परिवर्तित करके, पीछे की ओर अन्यत्र मजबूत स्थान पर ऐसा मंदिर बनाया जाए जो रिक्टर पैमाने पर 8 तीव्रता तक के भूकम्प को सह सके। वास्तुविद् सी.वी.सोमपुरा ने वर्तमान में वायव्यमुखी प्रतिमा को पूर्व या उत्तरमुखी करके वास्तुदोष को दूर करने की अनिवार्यता पर बल दिया, जिससे प्रतिमा की स्थायी सुरक्षा की व्यवस्था की जा सके। विशेषज्ञों के सुझाव अनुसार प्रबन्धसमिति ने आचार्य श्री विद्यासागर जी का आशीर्वाद प्राप्त कर प्राचीन भारतीय पंचायतन शैली के अनुरूप पाषाण निर्मित बिना सीमेंट और लोहे के उपयोग के भव्य मंदिर निर्माण का प्रस्ताव किया। आचार्यश्री के फरवरी 1999 में कुण्डलपुर आगमन पर उनके तथा समाज के गणमान्य व्यक्तियों के समक्ष 14 फरवरी 1999 को विद्या भवन कुण्डलपुर में, विशाल धर्मसभा में यह प्रस्ताव रखा गया, जो निर्विरोध स्वीकार हुआ। 3 मार्च 1999 को देश के मान्य प्रतिष्ठाचार्य संहितासूरी पण्डित नाथूलाल जी शास्त्री, इन्दौर से विधि-विधान तथा शास्त्र सम्मत जानकारी हेतु परामर्श करके नव मंदिर का शिलान्यास किया गया।

“पुरातत्त्व विभाग को पुरातत्त्व की चिंता है। हमें पूरे तत्त्व की” यह आचार्य श्री विद्यासागर जी का मत है। इतना कुछ हो जाने पर भी निरर्थक प्रश्न हवा में उछले हैं, निराधार शंकाएँ लोगों के मन में उत्पन्न की गयी हैं और जो अकारण



धारणाएँ एवं भ्रांतियाँ व्याप्त हो गई हैं, उनका निराकरण आपत्ति उठानेवाले महानुभावों को तब होगा, जब वे स्वयं क्षेत्र पर किये जा रहे निर्माण से अवगत होने के लिए पधारेंगे, तथ्यों से अवगत होंगे तथा अपनी आशंकाओं का निराकरण प्रबन्ध समिति से कर लेंगे।

वर्तमान गर्भगृह तथा श्रीधर केवली के स्थान को सुरक्षित रखकर इसके पास नये मानस्तंभ का निर्माण किया जायेगा। विस्तृत जानकारी के अभाव में बड़े बाबा की मूर्ति के स्थानान्तरण के प्रश्न को लेकर मूर्ति को क्षति, मूर्ति के अतिशय में कमी तथा इस प्रक्रिया में कुछ पुराने निर्माणों को हटाने के कारण प्राचीनता पर आँच आने जैसी शंकाएँ उठाई गई हैं। वस्तुस्थिति यह है कि किसी दूसरे के कब्जेवाली मिल्कीयत पर न कब्जा किया गया है, न ही जबरदस्ती करके तोड़फोड़ का षड्यंत्र रचा गया है। यह तो विशुद्ध रूप से कुण्डलपुर क्षेत्र की प्रबन्ध समिति तथा सकल जैन समाज का निजी मामला है। फरवरी 2001 में कुण्डलपुर में आयोजित महामस्तकाभिषेक के अवसर पर सकल जैन समाज ने नया भव्य मंदिर निर्माण करने तथा सभी मूर्तियों को उस मंदिर में विराजमान करने का संकल्प लिया था। मूर्ति-स्थानान्तरण से बड़े बाबा सहित किसी भी मूर्ति को रंच मात्र भी क्षति नहीं हुई है। सब कुछ तकनीकी विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में सरलता से हुआ है। बड़े बाबा की मूर्ति के स्थानान्तरण से उनकी महिमा व अतिशय में कोई कमी नहीं आयेगी, चाहे वे यहाँ रहें या वहाँ, वे बड़े ही रहेंगे। पूरे भारत के विभिन्न भागों में महामंत्र ऊँ ह्रीं श्री क्लीं ऐं बड़े बाबा अहं नमः स्वाहा के करोड़ों अखण्ड आराधन जाप तथा हजारों-हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में धार्मिक अनुष्ठान के साथ बड़े बाबा की प्रतिमा नवनिर्मित वेदी पर विराजमान की गयी। इस अवसर पर आचार्य श्री विद्यासागर जी के सान्निध्य में प्रथम महामस्तकाभिषेक इस नये स्थान पर किया गया। इस अवसर पर प्रवचन में आचार्यश्री ने कहा कि बड़े बाबा की नए मंदिर में स्थापना होने के लिए देशभर में लाखों लोगों ने जप किये थे। पहले बैलगाड़ी से लाए गए बड़े बाबा को अब भूगर्भ से निकालकर अंतरिक्ष में स्थापित किया गया है। इस अवसर पर पूज्य बड़े बाबा की जय के उद्घोष से समूचा धर्म क्षेत्र गुंजायमान हो गया था। इस अद्भुत ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनने पर हर भक्त अपने पुण्योदय को सराह रहा था। सब कुछ शांति से सानन्द सम्पन्न हुआ है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण उदाहरण है-अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा, जयपुर (राज.), जो केवल अपने अतिशय के लिए ही जाना जाता है। वहाँ

पद्मप्रभ भगवान की प्राचीन मूर्ति पुराने स्थान से स्थानान्तरित कर नवनिर्मित विशाल मंदिर में विराजमान की गई, किन्तु उसके अतिशय में कोई कमी नहीं आयी।

वर्तमान बड़े बाबा का मंदिर न तो मूलनायक प्रतिमा का मूल प्राचीन मंदिर है, न ही मूल गर्भगृह। महत्त्व मूर्ति की पवित्रता, प्राचीनता एवं पूजनीयता का ही है, स्थान का नहीं। महावीर जी में महावीरभगवान की अतिशयकारी प्रतिमा को प्राप्ति स्थल (जहाँ ग्वाले की गाय रोज दूध देती थी) पर न प्रतिष्ठित करके, अन्यत्र विराजित किया जा सकता है, तो कुण्डलगिरि में भगवान आदिनाथ जी बड़े बाबा की मूर्ति को खतरा होने से अन्यत्र विराजमान क्यों नहीं किया जा सकता? कोई भी समाज क्यों अकारण अपनी ही धरोहर को क्षति पहुँचाना चाहेगा? ध्यान देने की मूल बात यह है कि पुरातत्त्व के ज्ञाता, जैन धरोहर के संरक्षक, आचार्य व मुनिगण तथा तीर्थक्षेत्र की प्रबन्धकारिणी आदि बड़े बाबा की मूर्ति को क्षति पहुँचाने का खतरा मोल कैसे ले सकते हैं? गत 200 वर्षों में जैनसमाज के आधिपत्यवाले इस क्षेत्र में भारत सरकार और उसका पुरातत्त्व विभाग कभी नहीं जागा, न ही कभी उसने हस्तक्षेप किया और न ही कभी एक पैसा विभाग की ओर से कुण्डलपुर क्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन, विकास और देखभाल में लगाया गया। आस्थावान दिगम्बर जैन समाज के लाखों धर्मानुरागियों के तन, मन, धन व सहभागिता से ही सब कुछ सही दिशा में किया जा रहा है। समाज के कतिपय महानुभावों द्वारा उठाई गई सभी आशंकाएँ निर्मूल सिद्ध हो चुकी हैं।

धर्म व पुरातत्त्व की सुरक्षा चन्द व्यक्तियों की नहीं, सम्पूर्ण समाज की चिंता का विषय है। इस कार्य में समस्त मुनिसंघ और अधिकांश जैनसमाज की स्वीकृति है। प्रबन्ध समिति की आड़ में आचार्यों तथा देव, शास्त्र व गुरु सम्मत कार्यों का विरोध करना व बाधाएँ उत्पन्न करना न अभिनन्दनीय है, न ही स्तुत्य। जो कुछ भी किया जा रहा है धार्मिक, अध्यात्मिक, व्यवहारिक दृष्टि से पूरे तत्त्वों-वास्तु, कलात्मकता, प्राचीन संस्कृति, भव्यता, पवित्रता तथा सुरक्षा और अखण्डता का ध्यान रखते हुए किया जा रहा है। यह निर्माण भारतवर्ष का सबसे विशाल ऐतिहासिक दिगम्बर जैन मंदिर जिसमें पर्वत पर शिखर की ऊँचाई 171 फुट, मंदिर का सम्पूर्ण निर्माण गुलाबी रंग के वंशी पहाड़पुर के पत्थर से हो रहा है। देलवाड़ा मारुन्टआबू के मंदिर के समान नक्काशी नागर शैली का उपयोग किया जा रहा है। सोमवार 6 मार्च 2006 को उच्चन्यायालय, जबलपुर में तारीख

है। दिगम्बर जैन समाज की सभी संस्थाओं तथा प्रमुख महानुभावों द्वारा इस सम्बन्ध में प्रस्ताव स्वीकृत कर भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग को भेजा जाना चाहिये, जिसमें माँग की जाय कि समाज के इस सम्पूर्ण धर्म क्षेत्र कुण्डलपुर (दमोह) का आधिपत्य प्रबन्धकारिणी समिति कुण्डलपुर को सौंपा जाये, ताकि वह भविष्य में भी इस क्षेत्र का संरक्षण, संवर्धन तथा विकास कर सके एवं समूचे क्षेत्र को सर्वांगीण व भव्य स्वरूप दिया जा सके। माँगपत्र की एक प्रति

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र प्रबन्धकारिणी समिति, कुण्डलपुर (दमोह, म.प्र.) पिन 470773 को भेजी जाये। ऐसा राजस्थान के माऊन्टआबू में स्थित देलवाड़ा के जैन मंदिरों के संरक्षण-संवर्धन का अधिकार वहाँ की प्रबन्ध समिति को भारतसरकार के पुरातत्त्व विभाग के द्वारा सौंपा जा चुका है। ऐसा प्रावधान भारतीय पुरातत्त्व अधिनियम में है तथा यह न्याय का तकाजा भी है।

22, जॉय बिल्डर्स कॉलोनी (रानी सती गेट), इन्दौर

## दीक्षा दिवस

### मुनि श्री चन्द्रसागर जी

जब संकल्प शक्ति की यात्रा प्रारम्भ होती है तब जीवन यम की ओर गमन करने लगता है, यही संकल्प की विधि जीवन की दीक्षा है, जो पूरे जीवन भर पाप से बचा लेती है। और फिर जीवन की शोभा के लिये हाथ में संयमोपकरण (पिच्छिका) आ जाता है, जिसके द्वारा जीवों का रक्षण किया जाता है। जिस प्रकार मयूर पंख से निर्मित पिच्छिका मृदु होती है, उसी प्रकार हमारे भाव मृदु बने रहें और न पिच्छिका में पानी, तेल, धूल का स्पर्श होता है, ऐसे ही हमारी आत्मा विकारी भावों के स्पर्श से बची रहे। यही दीक्षा हमें प्रतिपल सावधान रहने का संकेत देती रहती है। ये जागृति हमारी आत्मा को मलिन होने से बचा लेती है अर्थात् बुराई में नहीं फँसने देती और कैसे खाना, कैसे पीना, कैसे बोलना, कैसे चलना, कैसे बैठना, कैसे उठना, कैसे सोना इत्यादि कार्यों के प्रति सचेत रहना ही दीक्षा के लक्षण हैं। जीवन का प्रत्येक पल दीक्षामय है। दीक्षा, काल से बँधकर नहीं पलती है। दीक्षा के संस्कार काल की मर्यादा को लेकर चलते हैं, किन्तु दीक्षा दिवस सावधानी का दिवस होता है। जहाँ प्रभात से लेकर चलते हैं, किन्तु प्रत्येक दिवस सावधानी चलती रहती है। सावधानी से चूकने पर जीवन को पतन की ओर जाने में देर नहीं लगती है। दीक्षा समीचीन दिशा का नाम है। जो दशा के परिवर्तन में कारण है। वैसे भी दिशा और दशा के कारण ही पापों का क्षय होता है। इसी भूमिका में शान्ति और सुख की अनुभूति होती है। यही धरती से ऊपर उठने की कला है। दीक्षा में मास, वर्ष की गिनती नहीं होती है, न समय को काटा जाता है। यह तो कर्म काटने की साधना पद्धति है। साधक अपने भावों को संभालते हुये दोषों का परिमार्जन करते हुये दीक्षामय जीवनयापन करते हुये साधना में लगा रहता है। यही दीक्षा दिवस है।

## मुनित्रय का दीक्षा दिवस

मध्यप्रदेश का एक हिस्सा पश्चिम निमाड़ और इसी निमाड़ की एक नगरी है सनावद, जो सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट जी के समीप है। इस नगरी को त्यागी-व्रतियों की नगरी कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। त्याग और तपस्या तो जैसे यहाँ की मिट्टी की खुशबू बन गई है।

सनावद नगर से एक दो नहीं, पूरे नौ दिगम्बर साधु हुए हैं। आचार्य वर्धमानसागर जी (जो अभी हुए श्रवणवेलगोला में महामस्तकाभिषेक के सूत्रधार थे) इस नगर के प्रथम मुनि हैं, जो आचार्य पद को सुशोभित कर रहे हैं और उनसे शुरू हुआ सिलसिला अब तक अनवरत जारी है। मुनिश्री प्रशस्तसागर जी, प्रबोधसागर जी एवं प्रयोगसागर जी बचपन से ही साथ खेले, साथ पढ़े और साथ रहे। तीनों दोस्तों की दोस्ती की प्रगाढ़ता इसी से जाहिर होती है कि सनावद नगर में 1993 में आर्यिकारत्न पूर्णमती जी के ससंघ चतुर्मास के दौरान तीनों के मन में वैराग्य के अंकुर फूटे, जो दिनों दिन बढ़ते गये। संघ में प्रवेश, घर परिवार का त्याग, कठिन व्रतों का लेना, इन सब क्रियाओं में व्यवधान भी आए, मगर जिसे वैराग्यलक्ष्मी का वरण करना हो, उसे कोई भी बाधा रोक नहीं सकती है। अपने पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिये अपने आपको अपने श्रद्धेय के प्रति समर्पित करने का भाव लिये हुए तीनों ब्रह्मचारी मुनि बनकर कठिन साधना करने निकल पड़े।

धन्य हैं वे माता-पिता, मित्र, परिवारजन एवं नगरवासी जिन्होंने अपने लाल जिनवाणी माता की गोद में अर्पित कर दिए हैं।

श्रीमती भारती जैन,  
नेहरू नगर, भोपाल

# शृंगार दुल्हन का : राह संन्यास की

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने 58 ब्रह्मचारिणी बहिनों को आर्यिका दीक्षा प्रदान की

जयकुमार जैन 'जलज'

सुप्रसिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर में 13 फरवरी 2006 को लगभग 50 हजार श्रद्धालुओं की उपस्थिति में देश के विभिन्न प्रांतों से आई 58 ब्रह्मचारिणी बहिनों ने उत्सवी माहौल में संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा प्राप्त की। यह पहला मौका है जब एक साथ इतनी अधिक संख्या में आचार्यश्री द्वारा आर्यिकादीक्षा प्रदान की गई।

इस अवसर पर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि बड़े बाबा के उच्च सिंहासन पर विराजित होने के उपरान्त यह चमत्कार हुआ है। ब्रह्मचारिणी बहिनों की भावना थी, पूर्व में अनेक बार उन्होंने दीक्षा हेतु भाव प्रकट किये थे, अब यह कार्य जल्दी से जल्दी हो जावे। होता कैसे बड़े बाबा भूगर्भ में थे। आज आपने अपने जीवनकाल में यह मोक्षमार्ग-महोत्सव देखा, इसे आत्म-महोत्सव कहें या संयम-महोत्सव कहें, इससे बढ़कर आर्यिकादीक्षा-महोत्सव क्या होगा! इन सभी ने चारित्र्य को, संयम को स्वीकार किया है, संयम मार्ग को चुना है। असंयम संसार का कारण है संयम मुक्ति का कारण है। संयमी गिने चुने होते हैं, असंयमियों की संख्या निर्धारित नहीं, अनंत कोटि में है। संयम एक नौका का कार्य करता है। आप लोग इस दृश्य को देखकर जीवन सार्थक करने हेतु पुरुषार्थ करें। जिन्होंने महाव्रत को धारण किया है, कर्मक्षय हेतु वे भूले नहीं, अपने मार्ग पर अविरल पल-पल पग-पग बढ़ते चलें मोक्षमहल की ओर।

दीक्षास्थल का नजारा तो अभूतपूर्व था। सुसज्जित मंच पर आचार्यश्री के साथ 48 मुनिगण, एक शतक से अधिक आर्यिका मातायें, नव दीक्षार्थी 58 ब्रह्मचारिणी बहिनें, सैकड़ों प्रतिभामंडल की ब्रह्मचारिणी बहिनें, दूर-दूर तक हजारों-हजार श्रद्धालुओं की कतारें, चारों ओर से उठती बड़े बाबा एवं आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का जय-जयकार। श्रद्धालु उस समय आर्द्र हो गये, जब दीक्षार्थी बहिनों ने वैराग्य के मंच से अपने परिवारजनों, गुरुजनों एवं उपस्थित जनसमूह से क्षमायाचना कर धर्मपथ पर चलने दीक्षा की ओर कदम बढ़ाया। दीक्षार्थी बहिनों के परिजन अपने आँसुओं को रोक नहीं सके, घर आंगन में पली, बड़ी लाड़ली बिटिया

मोक्षमार्ग के कठिन पथ पर जो बढ़ रही थी। सच के पीछे की भावना और भावनाओं के पीछे का सच जिसे समझ में आ जाता है वही दीक्षा को उपलब्ध होता है। यह आत्म-विजेता योद्धाओं का पथ है। इस पर कोई वीर महावीर ही चल सकता है क्योंकि शत्रुओं को जीतना आसान है पर अपने आप पर नियंत्रण सबसे कठिन काम है। धन्य थीं वे हजारों-हजार आँखें, जिन्होंने इस महान् दृश्य को देखा। पटना (बिहार) से पहली बार कुण्डलपुर पधारे 74 वर्षीय भँवरलाल जैन अपने जीवन में पहली बार कोई दीक्षा समारोह देख रहे थे, वे बिल्कुल चौथेकाल जैसे दृश्य का अनुभव कर रहे थे। सप्तम प्रतिमाधारी वयोवृद्ध डालचंद बड़कुल का कहना था- काश हमें गुरुवर पहले मिल गये होते, तो हम गृहस्थी न बसाते। जब चिड़िया चुग गई खेत अब पछताये होत का। ब्रह्मचारी त्रिलोकजी ने कहा- दीक्षा वह अवसर है, जब साधक अकरणीय कार्यों से मुक्त होकर रत्नत्रयस्वरूप करणीय कार्यों को करने के लिये कृतसंकल्प होता है। संजय चौधरी गुना का कहना था उनकी छोटी बहिन भारती दीदी सच्चे मार्ग पर कदम बढ़ा रही हैं, जहाँ दीक्षा पाकर उनका जीवन सुखी होगा। शादी करके भी ये सुख, खुशियाँ उन्हें हम नहीं दे पाते। दीक्षा ले रही डॉ. श्रद्धा दीदी के भाई सनत कुमार ने बताया कि हम लोग चाहते थे कि दीदी इतनी जल्दी दीक्षा न लें, पर दीदी तो अडिग रहीं, उनका कहना था जो कदम आगे बढ़ गये, पीछे नहीं हट सकते। ब्रती-नगरी पिण्डरई के विजयकुमार अपनी बिटिया अंजू को गुरुचरणों में सौंपते हुये प्रसन्न दिखे। आचार्यश्री ने सभी 58 दीक्षार्थी बहिनों को आर्यिका दीक्षा के संस्कार के साथ पिच्छी कमण्डलु एवं नये नाम दिये।

दीक्षा के पूर्वदिन कुण्डलपुर में आनंद का सागर वर्धमान सागर की लहरों के बीच हिलोरें लेता दृष्टिगत हो रहा था। दीक्षा ले रही अर्धशतक से ज्यादा ब्रह्मचारिणी बहिनों के दीक्षापूर्व लोकोपचार-संस्कार की रस्म मेंहदी, दुल्हन स्वरूप शृंगार, ओली भराई एवं बाजे-गाजे के साथ कुण्डलपुर कस्बे में निकली विनौरी-शोभायात्रा के अलौकिक दृश्य देखकर उपस्थित विशाल जनसमुदाय भाव विभोर हो गया। मेंहदी रस्म के समय वंदना जैन दमोह अपने भाग्य को सराहते



कल्पना दीदी खुरई के हाथों में मेंहदी रचाते इतनी खुश दिखीं कि कह उठीं- ऐसा लग रहा है कि पूरे हाथों में मेंहदी रचा दूँ। महावीर उदासीन आश्रम कुण्डलपुर के अधिष्ठाता पं.अमरचंद जी शास्त्री का कहना था कि आज के टी.वी.-मोबाइल युग में जब विलासिता और पाप करने के साधन घरों में घुस गये हैं, ऐसे समय में बच्चे सांसारिकता से मुँह मोड़कर आचार्यश्री का निमित्त पाकर वैराग्यपथ धारण कर रहे हैं, पूर्व जन्म में इन्होंने कितना पुण्य अर्जन किया होगा! 87 वर्षीय देशरानी दीक्षासमारोह के साथ-साथ बड़े बाबा के दर्शन करते-करते बोल उठीं-आज हृदय गदगद हो गया। हम सोच भी नहीं सकते थे कि हमें अपने जीवन में उच्च सिंहासन पर विराजमान बड़े बाबा के नये मंदिर में दर्शन कभी हो सकेंगे। जौहरीबाजार जयपुर से पधारे एक बुजुर्ग सज्जन का कहना था- ऐसा लग रहा है जैसे साक्षात् भगवान के समवशरण के दर्शन हो रहे हों। कार्यक्रम संचालन आर्यिकारत्न श्री गुरुमति जी एवं आर्यिकारत्न श्री दृढ़मति जी ने किया।

### दीक्षित आर्यिकाओं के

पूर्व नाम	दीक्षानाम
1. ब्र.शशि, सागर	श्री स्वस्थमति जी
2. ब्र.भारती, सागर	श्री तथ्यमति जी
3. ब्र.साधना, शाहपुर	श्री वात्सल्यमति जी
4. ब्र.रजनी, गुना	श्री पथ्यमति जी
5. ब्र.संतोष, कुचामन	श्री जाग्रतमति जी
6. ब्र. डॉ. श्रद्धा, बण्डा	श्री कर्त्तव्यमति जी
7. ब्र. डॉ. देविका, जबलपुर	श्री गंतव्यमति जी
8. ब्र.कल्पना, गुना	श्री संस्कारमति जी
9. ब्र. पद्मश्री, जुगुड़ (कर्ना.)	श्री निष्काममति जी
10. ब्र. राजश्री, जुगुड़ (कर्ना.)	श्री विरतमति जी
11. ब्र. राखी, विदिशा	श्री तथामति जी
12. ब्र.अंजू, पिण्डरई	श्री उदारमति जी
13. ब्र.बबीता, सतना	श्री विजितमति जी
14. ब्र.श्वेता, छिंदवाड़ा	श्री संतुष्टमति जी
15. ब्र. डॉ. मीनू, जबलपुर	श्री निकटमति जी
16. ब्र. प्रीति, नागपुर	श्री संवरमति जी
17. ब्र. भारती, बण्डा	श्री ध्येयमति जी
18. ब्र. रेणु, दिल्ली	श्री आत्ममति जी
19. ब्र.पप्पी, सतना	श्री चैत्यमति जी

20. ब्र.कल्पना,शाहपुर	श्री पृथ्वीमति जी
21. ब्र.मनीषा, नागपुर	श्री निर्मदमति जी
22. ब्र.दीपा, खुरई (सागर)	श्री पुनीतमति जी
23. ब्र.कल्पना, खुरई	श्री विनीतमति जी
24. ब्र.संगीता, खुरई	श्री मेरुमति जी
25. ब्र.मीरा, बरा (सागर)	श्री आप्तमति जी
26. ब्र.वाणी, चैय्यार (त. ना.)	श्री उपशममति जी
27. ब्र.पम्मी, कोसावेल(छ.ग.)	श्री ध्रुवमति जी
28. ब्र.मनीषा, पथरिया	श्री असीममति जी
29. ब्र.अंजू, पथरिया	श्री गौतममति जी
30. ब्र. ज्योति, कुंभराज	श्री संयतमति जी
31. ब्र.अंजू, बांदकपुर	श्री अगाधमति जी
32. ब्र.ज्योति, चरगवां	श्री निर्वाणमति जी
33. ब्र.वंदना, चरगवां	श्री मार्दवमति जी
34. ब्र.प्रीति, चरगवां	श्री मंगलमति जी
35. ब्र.कीर्ति, दिग्रस (महाराष्ट्र)	श्री परमार्थमति जी
36. ब्र.मधु, टड़ा (सागर)	श्री ध्यानमति जी
37. ब्र.अनीता, नागपुर	श्री विदेहमति जी
38. ब्र.नीलम, जरुआखेड़ा	श्री अवायमति जी
39. ब्र.ममता, बहेरिया रहली	श्री पारमति जी
40. ब्र.विनीता, गढ़ाकोटा	श्री आगतमति जी
41. ब्र.जूली, सागर	श्री श्रुतमति जी
42. ब्र.साधना, जबलपुर	श्री अदूरमति जी
43. ब्र.सुनीता, नन्हीं देवरी	श्री स्वभावमति जी
44. ब्र.सरिता, पथरिया	श्री धवलमति जी
45. ब्र. आकांक्षा,शाहपुर (सागर)	श्री विनयमति जी
46. ब्र.सपना, शाहपुर (सागर)	श्री समितिमति जी
47. ब्र.साधना,दमोह	श्री अमितमति जी
48. ब्र. सरिता,करापुर (सागर)	श्री परममति जी
49. ब्र.प्रियंका, सांगा (दमोह)	श्री चेतनमति जी
50. ब्र.पिंकी,नागौद	श्री निसर्गमति जी
51. ब्र. निधि, रांझी, जबलपुर	श्री मननमति जी
52. ब्र. नीलू, तेंदूखेड़ा	श्री अविकारमति जी
53. ब्र.स्वाति,जैसीनगर	श्री चारित्र्यमति जी
54. ब्र.ज्योति, जैसीनगर	श्री श्रद्धामति जी
55. ब्र.सरिता, जैतपुर कोपरा	श्री उत्कर्षमति जी
56. ब्र. सूर्यकुमारी अम्मा, तमिलनाडु	श्री संगतमति जी
57. ब्र. सुशीला, ललितपुर	श्री लक्ष्यमति जी
58. ब्र. प्रभाबाई,जबलपुर	श्री भक्तिमति जी

# सूतक एवं मरणसूतक : शास्त्रीय चर्चा

डॉ. श्रेयांसकुमार जैन

मानवजीवन में घटनाओं का क्रम चलता रहता है। कभी चाही घटना घटित होती है, तो कभी अनचाही घटना घटित होती है। चाही घटना घटित होने पर हर्ष उत्पन्न होता है और अनचाही घटना घटित होने पर शोक बढ़ता है। हर्ष के बढ़ने और शोक के बढ़ने से रागद्वेष की अधिकता मन में उत्पन्न हो जाती है। राग-द्वेष का अतिरेक ही अशौच की उत्पत्ति और वृद्धि करने वाला होता है। तात्कालिक घटनाओं से वह मानसिक अस्थिरता और अपवित्रता शीघ्र दूर नहीं होती, उसे दूर होने में/शान्त करने में समय लगता है, वही कालशुद्धि है, उसी को सूतक और मरणसूतक कहा गया है। अर्थात् परिवार में बालक-बालिका के जन्म से होने वाली अशुद्धि को सूतक कहते हैं, यही सुआ कहा जाता है। परिवार में व्यक्ति के मरण के पश्चात् उत्पन्न हुई अशुद्धि को मरणसूतक कहते हैं। मरणसूतक को पातक भी कहा जाता है।

सूतक व मरणसूतक (पातक) का विवेक भोजनशुद्धि के प्रकरण में शास्त्रों में विशेष रूप से बताया गया है किन्तु वर्तमान में कुछ लोग इसको बिल्कुल भी नहीं मानना चाहते हैं, उन्हीं की मान्यता अज्ञानता के निवारण हेतु शास्त्रीय प्रमाणों के साथ लौकिक/व्यवहारिक रूप से मान्य विधान की प्रस्तुति की जा रही है।

भगवतीआराधना की विजयोदयाटीका में लिखा गया है-  
“मृतजातसूतकयुक्तगृहजनेन ..... दीयमाना वसतिर्दायकदुष्टा (230/444/20) जिसको मरणाशौच अथवा जननाशौच कहते हैं। यदि उसके द्वारा वसतिका दी गई हो तो वह दायक दोष से दुष्ट है। अशौच वाले व्यक्ति को वसतिका प्रदान करने का भी निषेध किया गया है।

यहाँ यह विचारणीय है कि जो साधु गृहस्थों के निवास स्थान/ मकान कोठी में निवास/ विश्राम/ चतुर्मास करते हैं, वे दायक दोष से कैसे बच सकते हैं। उनकी मानसिक शुद्धि कैसे रहे? हाँ प्रायश्चित्तसंग्रह में जिनका सूतक नहीं लगता उनके विषय में भी कहा गया है -

बालत्रयशूरत्वाञ्चलनादि प्रदेशे दीक्षितैः।

अनशनप्रदेशेषु च मृतकानां खलु सूतकं नास्ति।।353।।

तीन दिन का बालक, युद्ध में मरण को प्राप्त, अग्नि आदि के द्वारा मरण को प्राप्त, जिनदीक्षित, अनशन करके

मरण को प्राप्त व्यक्तियों का मरणसूतक नहीं लगता।

यहाँ अग्नि आदि के द्वारा मरण को प्राप्त व्यक्ति से अर्थ उसका है, जो किसी अग्निकाण्ड में फंस गया हो अचानक बिजली गिरने से जिसकी मौत हो गई हो उसका मरणसूतक नहीं लगेगा किन्तु जिसने अग्नि में जलकर आत्मघात किया हो, उसका मरणसूतक अवश्य लगेगा।

अशौच वाले व्यक्ति को वसतिका प्रदान करने का भी निषेध किया गया है। सूतक न लगने के प्रकरण में जयसेन प्रतिष्ठापाठ से लिया गया है कि -

यद्वंश्यतीर्थरबिम्बमुदीर्य संस्था मुख्या तदीयकुलनगोत्रजनिप्रवेशात्।  
संवृत्तगोत्रचरण प्रतिपातयोगादाशौचमावहतुनोद्यभवप्रशस्तम्॥ 258 ॥

जिस वंश वाला यजमान बिम्ब प्रतिष्ठा करा रहा हो, उसके वंश, कुल, गोत्र में उस दिवस से अशौच नहीं माना जाता अर्थात् जिस दिन नान्दी अभिषेक हो गया हो उस दिन से यजमान के कुल में अशौच (सूतक-पातक) नहीं होता।

प्रतिष्ठापाठ के इस कथन के आधार पर यजमान के परिवार को नान्दी अभिषेक के बाद सूतक, मरणसूतक (पातक) होने पर भी पूजा-विधान करने का अधिकार है। वर्तमान में जो प्रतिष्ठाचार्य अथवा साधुजन सूतक की संभावना वाले परिवार को नाला बांधकर परिवार या निजघर से बाहर रहने की आज्ञा (सलाह) देते हैं, उसकी आवश्यकता नहीं है। यहाँ जयसेन स्वामी का यह आशय रहा होगा कि नान्दी विधान के अनन्तर यजमान के अन्तर में रागद्वेष का शमन हो जाता है, जिससे मानसिक अशौच उत्पन्न नहीं होता। सांसारिक घटनाओं के कारण से धार्मिक क्रियाओं से वंचित नहीं करना चाहिए। भरत चक्रवर्ती पुत्रोत्पत्ति होने पर भी समवशरण में आदिनाथ महाप्रभु की पूजा करने जाता है, जिसका समाधान दिया जाता है कि तिरैसठ शलाका पुरुषों को सूतक एवं मरणसूतक (पातक) का दोष नहीं लगता।

उक्त व्यक्तियों से भिन्न जो गृहस्थ हैं, उन्हें सूतक मरणसूतक (पातक) का दोष अवश्य लगता है, क्योंकि मुनियों के आहारदान के प्रकरण में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि मरणसूतक अथवा सूतक की अवस्था वाले यदि आहारदान देते हैं तो उसका क्या फल है? सूतक वालों को इसी के साथ जिनार्चा, देव-शास्त्र-गुरु के स्पर्श का भी

निषेध समझना चाहिए।

आचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने त्रिलोकसार में कहा है-

**दुब्भाव असुचिसूदगपुष्पवई जाइ संकरादीहिं।**

**कयदाणा वि कुवत्ते जीवा कुणरेसु जायंते ॥१२४ ॥**

अर्थात् सूतककरि जो अपवित्र है। यदि ऐसा मनुष्य आहार दान करे है तो वह कुमनुष्य विषे उपजे है।

मूलाचार के पिण्डशुद्धि अधिकार में दायक के दोषों का कथन करते हुए कहा गया है-“मृतकं सूतकेन श्मशाने परिक्षिप्यागतो यः स मृतक इत्युच्यते”।

अर्थात् जो मृतक को श्मशान में जलाकर आया है, ऐसा मरणसूतक वाला आहार दान देने योग्य नहीं है। यही बात पिण्डत आशाधर जी ने भी लिखी है कि शव को श्मशान में छोड़कर आये हुये मरण सूतक से युक्त पुरुषों द्वारा दत्त आहारदायक दोष से दूषित समझना चाहिए। और जिसके सन्तान उत्पन्न हुई हो उससे भी आहार ग्रहण नहीं करना चाहिए। मोक्षपाहुड की टीका में कहा गया है कि दरिद्री और सूतकवाली स्त्री के घर का विशेष रूप से आहार ग्रहण न करें। श्रावकों के लिए भी कहा गया है कि अणुव्रती श्रावकों को अपने भोजन की शुद्धि बनाये रखने के लिए सूतक मरणसूतक (पातक) वाले व्यक्ति के घर का भोजन त्याग करना चाहिए। अर्थात् सूतक-पातक वाले व्यक्तियों के घर आहार ग्रहण नहीं करना चाहिए।

उक्त उल्लेखों/शास्त्रीय प्रमाणों को पढ़कर/सुनकर भी कुछ लोग सूतक, मरणसूतक (पातक) काल की अशुद्धि को न मानकर धार्मिक क्रियाएं करते हैं अथवा शास्त्रोक्त वार्ता का निषेध करते हैं, उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि निम्न तथ्य अवश्य समझें कि जिस मकान/घर में किसी का जन्म या मृत्यु होती है, वहाँ रोग, शोक की उत्पत्ति निश्चित होती है और उसके कारण, अपवित्रता व्याप्त हो जाती है जो स्नान, वस्त्र/मकान धोने से दूर न होकर यथाकाल दूर होती है। बालक जब जन्मता है तो उसके साथ माता के उदर से जेर की जो उत्पत्ति होती है, उसमें अनंत जीवों का वास होता है, उसे भूमि में गड़वाने से असंख्यात जीवों की हिंसा का दोष लगता है। उस पाप के कारण भी विशेष अशौच होता है। इसी प्रकार मृतक के शरीर को अग्निदाह कराने से उस शरीराश्रित अनंत जीवों की हिंसा का भी दोष लगता है। श्रावक को उक्त दोनों क्रियाएँ आवश्यक रूप से

करनी पड़ती है। उनके कारण उसके अत्यधिक जुगुप्सा होती है। मन मलिन होता है जिससे अशौच की उत्पत्ति होती है। मूलाराधना की 646 गाथा टीका में जुगुप्सा दो प्रकार की कही है। लौकिकी व लोकोत्तर/लोक व्यवहार शोधनार्थ सूतक आदि का निवारण करने के लिए जो लौकिकी जुगुप्सा की जाती है वह छोड़ने योग्य है और परमार्थ या लोकोत्तर जुगुप्सा करने योग्य है। परमार्थ जुगुप्सा में विरक्ति का भाव रहता है। अतः उसे करणीय बतलाया है।

अशौच समय के साथ ही दूर होता है अतः जन्म का सूतक और मरण का सूतक (पातक) दोष का निवारण सभी को करना चाहिए। जो परिवार के सदस्य के मरण के बाद तेरहवीं की प्रथा को एक-दो दिन में ही पूर्ण कर लिया जाता है वह ठीक नहीं है क्योंकि उससे संवेदनाएँ भी शून्य होती जाती हैं। हाँ तेरहवीं तक रोना/शोक करना आदि न कर धार्मिक चर्चाएँ होना चाहिए। रिश्तेदार और कुटुम्बी जनों के आवागमन काल में संसार की असारता का वातावरण बनाया जाए, जो पापभीरू बनाएगा। इससे आंतरिक विशुद्धि बढ़ती है। एक-दो-तीन दिन में तेरहवीं पर संसार के राग-रंग में पूर्ववत् ही फंस जाते हैं। यदि काल की मर्यादा का लाभ न होता तो आचार्यों को लिखने की क्या आवश्यकता थी? इन शास्त्रों में शुद्धि का जो काल बताया है उसे भी अब दर्शाया जा रहा है। श्रावक की तिरेपन क्रियाओं में भी शुद्धि के काल का प्रसंग आ जाता है।

आचार्य जिनसेन ने गर्भान्वय क्रियाओं के वर्णन प्रसंग में बहिर्यान क्रिया को बताते हुए लिखा है-

**बहिर्यानं ततो द्वित्रैः मासैस्त्रिचतुरैरुत।**

**यथानुकूल मिष्टऽह्नि कार्यतूर्यादिमंगलैः ॥१० ॥**

**ततः प्रमृत्यभीष्टं हि शिशोः प्रसववेश्मनः।**

**बहिः प्रणयनं माता धात्र्युत्सङ्गस्य वा ॥११ ॥**

तदनंतर (प्रसूति के) दो-तीन अथवा तीन-चार माह के बाद किसी शुभ दिन तुरही आदि मांगलिक बाजों के साथ-साथ अपनी अनुकूलता के अनुसार बहिर्यान क्रिया करनी चाहिए। जिस दिन यह क्रिया की जाए उसी दिन से माता अथवा धाय की गोद में बैठे हुए बालक का प्रसूति गृह से बाहर ले जाना सम्मत है।

वर्ण भेद की अपेक्षा सूतक, मरणसूतक (पातक) की अवधि पर विचार किया गया है। ब्राह्मण पाँच दिन में, क्षत्रिय दस दिन में, वैश्य<sup>३</sup> बारह दिन में और शूद्र पंद्रह दिनों

में पातक के दोष से शुद्ध होते हैं।

अशौच का जो काल लोक व्यवहार में प्रचलित वह भी दृष्टव्य है-

अवसर	जन्म	मरण	गर्भपात	अशुद्धि
3 पीढ़ी	10 दिन	12 दिन	3 मास के गर्भपात बाद जितने माह का गर्भपात हो	3 दिन
4 पीढ़ी	10 दिन	10 दिन		
5 पीढ़ी	6 दिन	6 दिन		
6 पीढ़ी	4 दिन	4 दिन		उतने दिन
7 पीढ़ी	3 दिन	3 दिन		का दोष
8 पीढ़ी	8 प्रहर	4 प्रहर	यदि घर का	घर वालों
9 पीढ़ी	2 प्रहर	2 प्रहर	सदस्य परदेस को	सूचना मिलने
पुत्री, दासी, दास, अपने घर में गाय भैंसों	-	3 दिन	में मरण को प्राप्त हो	के बाद पीढ़ी के अनुसार 6 माह
अनाचारी स्त्री	1 दिन	1 दिन	अपघात मृत्यु	-
	सदा अशुचि	सदा अशुचि	-	-

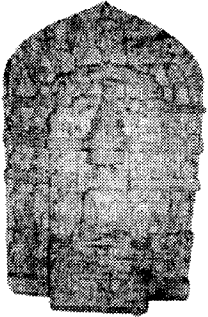
**सूतक पातक शुद्धिकाल चक्र-** इसके अतिरिक्त रजस्वला स्त्री के स्पर्श को भी दोष बताया गया है। उसके द्वारा यदि पात्र को आहार दिया जाता है तो वह पुष्पवती स्त्री कुयोनि की पात्र बनती है। इसके स्पर्श होने पर भोजन छोड़ने का कथन श्रावकों के लिए भी है।<sup>1</sup> इसी कारण इनकी शुद्धि के काल की चर्चा महापुराण<sup>6</sup> में की है। चतुर्थ स्नान के द्वारा शुद्ध हुई स्त्री अरहंत देव की पूजा कर सकती है और गार्हस्थ्य सम्बन्धी कार्यों में प्रवृत्त हो सकती है।

उक्त विवेचन के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि संस्कारों की पवित्रता रखने के लिए सूतक पातक सम्बन्धी काल मर्यादा का पालन अवश्य करना चाहिए।

### संदर्भ

1. शवादिनापि ..... दत्तं दायकदोषमाक् 5/34 अनगार धर्मांमृत
2. मोक्षपाहुड गा. 48 टीका पृ. 112
3. लाटी संहिता 5/251
4. ब्राह्मणक्षत्रियविद्<sup>4</sup> शूद्रादिदिनैः शुद्धयन्ति पञ्चभिः।  
दश-द्वादशभिः पञ्चादश वा संख्याप्रयोगतः ॥53 ॥ प्रायश्चित्तसंग्रह
5. सागार धर्मांमृत 4/70
6. महापुराण 38 /70

## नवग्रह भगवान के सेवक हैं



श्री दिगम्बर जैन संघी जी मंदिर अतिशय क्षेत्र, सांगानेर, जयपुर से, कौन दिगम्बर जैन धर्मानुयायी अपरिचित है। यह भव्य जिनालय लगभग 1000 वर्ष प्राचीन और 7 मंजिला है। जिसमें 4 मंजिल जमीन के अंदर हैं। यह मंदिर पत्थर की नक्काशी के लिये विश्व प्रसिद्ध है। प्रतिदिन बहुसंख्या में देशी एवं विदेशी पर्यटक लोग, इस जिनालय के दर्शन हेतु पधारते हैं। इस मंदिर में विराजमान जिनबिम्ब भी अत्यन्त मनोहारी एवं दिव्य हैं। उन्हीं जिनबिम्बों में से, यह एक 'चौबीसी' को प्रदर्शित करने वाला जिनबिम्ब है, जो लगभग 3 फुट ऊँचा एवं सफेद मार्बल का है। इसकी एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि इसमें सबसे नीचे 9 धड़ दिखाए हुए हैं, जो इस बात का प्रतीक है कि सभी ग्रह भगवान के सेवक हैं अथवा जिनेन्द्र भगवान का स्तवन करने से नवग्रह कृत दोष स्वमेव शान्त हो जाते हैं।

पं. रतनलाल बैनाड़ा

मार्च 2006 जिनभाषित / 19

जैनधर्म, साहित्य और संस्कृति के विकास में संपूर्ण दक्षिण भारत की गौरवशाली परम्परा रही है। राजवंशों, मंदिरों, मंदिर निर्माताओं, आगम ग्रंथों, आगम ग्रंथों के लेखकों लिपिकारों, श्रेष्ठियों और श्रावकों ने जो योगदान दिया वह स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। भगवान बाहुबली की विश्व प्रसिद्ध प्रतिमा, श्रवणबेलगोला एवं दक्षिणभारत के अन्य शिलालेख दक्षिणापथ के इतिहास को सुरक्षित/संजोए रखे है। प्राकृत एवं संस्कृत भाषा को साथ लिये स्थानीय भाषा को जो संरक्षण यहाँ मिला वह बेजोड़ है। मूल दिगम्बर जैन आगम सुरक्षित रखने में दक्षिण का विशिष्ट योगदान रहा है। इन सभी धरोहरों के साथ 20 वीं शताब्दी में गुरुकुल परम्परा को दक्षिण में एक सुदृढ़ आधार प्रदान करने वाले पूज्य मुनि श्री समन्तभद्र महाराज का भी विशेष योगदान है। गुरुकुलों के माध्यम से दक्षिण भारत में ज्ञान का जो आलोक फैलाया उससे आज भी संपूर्ण दक्षिण भारत प्रकाशवान है।

एक कुशल शिल्पी की भांति अपनी योजनाओं को मूर्तरूप देने वाले, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, देवचंद से समन्तभद्र महाराज तक की यात्रा करने वाले पूज्य समन्त भद्र जी महाराज की कर्मठता उनकी जैनधर्म संस्कृति के प्रति गहन निष्ठा को व्यक्त करती है। उन्होंने अपनी योजनाओं को एक लघु बीज के रूप में बोकर विशाल वटवृक्ष के रूप में साकार किया।

विद्यार्थी जीवन से ही उनके मन में देशसेवा व समाज सेवा के भाव उभरते रहते थे। आजादी के आंदोलन के समय उनकी राष्ट्रीयता की भावना बलवती हो गयी। वे सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी पं. अर्जुनलाल सेठी के विद्यालय में पढ़ने जयपुर आये पर उनका विचार था कि देश की सेवा हिंसात्मक तरीके से नहीं वरन् अहिंसात्मक ढंग से करनी चाहिए। उनके क्रान्तिकारी साथियों में से एक मोतीचंद को एक केस में फांसी की सजा भी हुई थी। वे जयपुर से अपनी पढ़ाई पूरी कर आगे की पढ़ाई के लिये अपने मित्र बालचंद के साथ बंबई आ गये। शिक्षा पूरी करके उन्होंने समाज सेवा का मार्ग चुना और सच्चरित्र नागरिकों के निर्माण में लग गये।

आत्मस्वातंत्र्य की भावना भाते हुए उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। 1934 में क्षुल्लक दीक्षा ली और संयम

पथ पर चलते हुए 1952 में मुनि दीक्षा ली। वे जीवन भर अपने पद के प्रति सावधान रहे और मुनि पद के अनुकूल चर्चा में संलग्न रहे। ज्ञान, ध्यान, तप में लीन महाराज जी ने लगभग सभी प्रमुख आगम ग्रंथों का पठन-पाठन स्वाध्याय एवं चिंतन-मनन किया, स्वयं पढ़ते और दूसरों को भी पढ़ने की प्रेरणा देते थे। जैन ग्रंथों के साथ उन्होंने स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ के वाङ्मय का अध्ययन भी किया। जैन धर्म के सिद्धान्तों की प्रभावना एवं संरक्षण में अपना सारा जीवन लगा दिया। अच्छा वक्ता बनने या भाषणबाजी की निपुणता या श्रेष्ठ प्रवचनकार बनने की लालसा उन्हें कभी नहीं रही। ख्याति नाम से दूर रहकर त्याग-संयम के नियम को साथ लिये स्वपर कल्याण में लगे रहे ऐसे निस्पृही साधु आज के समय में दुर्लभ हैं।

पूज्य समन्तभद्र जी महाराज ने जब समाज की ओर दृष्टि डाली तो उनके सामने मुख्य समस्या थी कि 'जैनों को जैन' कैसे बनाये रखें। दक्षिणभारत में जैनधर्म एवं संस्कृति में विसंगतियां आती जा रही थीं, संस्कारों का लोप होता जा रहा था। इन सबको कैसे फिर से जीवित करें? कैसे अपने गौरवशाली इतिहास और सांस्कृतिक विरासत को बचायें? व्यक्तियों और संस्थाओं को कैसे जोड़ें? भोगवादी संस्कृति से युवा पीढ़ी धर्म-संस्कृति से दूर होती जा रही है, कैसे उसे दिशा दें? खानपान प्रदूषण से लेकर वैचारिक प्रदूषण तक कैसे बचें? जीवनचर्या कैसे व्यवस्थित बने? आदि प्रश्न उनके मन में सदैव घुमड़ते रहते थे और इन सबका समाधान उन्हें गुरुकुल परम्परा में दिखा। फलतः उन्होंने कार्यकारी योजना बनाकर गुरुकुलों की स्थापना का महनीय कार्य किया और धर्म एवं संस्कृति के मूल्यों को गुरुकुलों के द्वारा ही स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने इस बात पर सदैव बल दिया कि अध्यात्म तो मुख्य है पर व्यवहारिक धर्म-क्रिया, संस्कार भी जीवन में बहुत आवश्यक हैं। सामान्य जन सिद्धान्तों के कथन को नहीं पकड़ पाते हैं। व्यवहारिक नियमों के माध्यम से, चर्चा के माध्यम से इन्हें आसानी से समझाया जा सकता है।

उत्तरभारत में लगभग उन्हीं दिनों वर्णी जी के प्रभाव से अनेक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना हुई थी। वाराणसी में



श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, सागर, मुरैना आदि जगहों पर विद्यालयों की स्थापना हुई। इनके माध्यम से धर्म के प्रति जागरूकता तो आयी ही जैन पण्डित परम्परा को भी एक दिशा मिली। दक्षिण भारत के विद्यार्थी भी इन्हीं विद्यालयों में ज्ञान अर्जन करने आते रहे। गुरुवर समन्तभद्र जी महाराज ने दक्षिण भारत में ज्ञान की अलख जगा दी। सन् 1918 में कारंजा में गुरुकुल की स्थापना की। इसके बाद तो प्रकाश स्तम्भ के रूप में एक के बाद एक गुरुकुल खुलते गये। कारंजा श्राविकाश्रम, बाहुबली कुम्भोज, स्तवनिधि, शोलापुर, कारकल, खुरई, वेल्लाद, वागेवाड़ी, तरदेल, एलोरा आदि प्रमुख हैं। उन्होंने कुम्भोज बाहुबली को केन्द्र बनाकर दक्षिण भारत के सभी गुरुकुलों में जैनधर्म एवं संस्कृति की अलख जगा दी। महाराज जी की दृढ़ संकल्प शक्ति और अद्भुत कार्यशैली से गुरुकुलों की स्थापना एवं विकास में सफलता मिली। समाज ने भी उदारतापूर्वक पूर्ण सहयोग दिया। सभी वर्गों का समर्थन मिला। गुरुकुल विकास पथ पर चल पड़े और चल पड़ी जैनधर्म संस्कृति के संरक्षण की योजनायें।

पूज्य महाराज जी जहाँ अपनी निर्दोष व नियमपूर्वक चर्या के लिये विख्यात थे वहीं बच्चों के संस्कार निर्माण में एक कुशल शिल्पी के रूप में भी विख्यात रहे। बच्चों की धार्मिक कक्षा स्वयं लेते थे। शिक्षा के क्षेत्र में अनेक योजनाओं को उन्होंने साकार किया। महाराज जी में कार्य करने की अद्भुत क्षमता थी स्वयं शिक्षित होने के कारण कभी रूढ़ियों में नहीं जकड़े। उन्होंने नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को गुरुकुलों के माध्यम से स्थापित करने का भागीरथी प्रयत्न किया। महाराज जी ने इस बात पर भी चिंतन किया कि समाज सेवा के क्षेत्र में समर्पित कार्य-कर्ताओं का अभाव सा रहता है और जहाँ कहीं भी समर्पित लोगों ने कार्य हाथ में लिया उन्हें सफलता मिली है। अतः उन्होंने व्यक्तियों और संस्थाओं को जोड़ा और समर्पित कार्यकर्ता तैयार किये, जो

प्रायः सभी ब्रह्मचारी थे। विद्वान्, संस्कारवान एवं कार्यदक्ष लोगों की एक ऐसी टीम तैयार की जिन्होंने धर्म एवं संस्कृति को जीवंतता प्रदान की और गुरुकुलों को विकास की ऊँचाईयों तक पहुँचाया। आज अनेक विद्यार्थी इन गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त कर अपने व्यवसाय के साथ-साथ जैनधर्म संस्कृति के संरक्षण का महान् कार्य कर रहे हैं। दक्षिणभारत में एक प्रबुद्ध वर्ग स्थापित करने में इन गुरुकुलों का बड़ा योगदान रहा है। किसी ने सच ही कहा था कि 'महाराज जी को गुरुकुलों का गुरुकुल कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।'

दक्षिणभारत में फैले जैन मंदिरों के संरक्षण एवं सुरक्षा की परम आवश्यकता है। इस कार्य के लिये भी महाराज जी ने समाज का एवं विभिन्न संगठनों का ध्यान आकर्षित किया, उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि दिगम्बर संस्कृति की धरोहर, इन तीर्थों की सुरक्षा में ही हमारी धर्म संस्कृति जीवित रहेगी। तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा एवं विकास हेतु चलाया अभियान उन्होंने जीवन के अंत तक निभाया और अनेक विवादास्पद तीर्थों को बचाया।

आपसी लड़ाई और गुटबाजी से धर्म-संस्कृति कमजोर पड़ती है। महाराज जी सदैव इस बात पर बल देते थे कि जैन समाज को परस्पर मतभेदों को भुलाना चाहिए।

पूज्य गुरुवर के व्यक्तित्व व कृतित्व को देखें तो प्रतीत होता है कि नियम-संयम के पथ पर चलते हुए उन्होंने एक ऊर्जापूर्ण ढंग से न केवल अपनी योजनाओं पर कार्य किया बल्कि समाज को भी एक दिशा दी। विचारणीय है कि आज हम सब इस दिशा में कितना चल पा रहे हैं। कुछ गुरुकुलों को छोड़ दें तो अन्य के प्रति समाज की उदासीनता देखी जा सकती है। संस्कारों, तीर्थरक्षा, संस्कृति-संरक्षण की बात करें तो योजनायें, भाषण व लेख आदि ही दिखाई दे रहे हैं। अतः आवश्यकता है आज पुनः चिन्तन मनन और विचार की ताकि समाज को एक दिशा मिले।

### मुनि को आहार में देने योग्य शुद्ध गुड़ बनाने की विधि

गन्ने के रस को एक पतीली या कड़ाई में उबालने रखें। उबलने पर एक चम्मच दूध डालकर, ऊपर से मैल निकालकर गुड़ को साफ कर लें। इसके बाद उसमें दो चम्मच शुद्ध घी डाल दें। जब गुड़ की चासनी खूब गाढी हो जाये तब कढ़ाही नीचे उतारकर उसे ठण्डा होने तक चम्मच से चलाते रहें। इस तरह शुद्ध गुड़ बन जायेगा।

प्रस्तुति - सरिता जैन, नन्दुरवार

### शाहपुरा, भोपाल में कलशारोहण

परमपूज्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शुभाशीष एवं पूज्य मुनि श्री चिन्मयसागर जी महाराज के पावन सात्रिध्य में प्रतिष्ठाचार्य बा. ब्र. अनिल जी भोपाल के निर्देशन में दिनांक 11 एवं 12 फरवरी 2006 को श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर, शाहपुरा, भोपाल के शिखर पर कलशारोहण महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ।

सन्तोष कुमार जैन, सचिव

# साहित्याचार्य जी की साहित्य-साधना

डॉ. राजेश जैन

भाषाओं की जननी संस्कृत के तपोनिष्ठ साहित्य मनीषी डॉ. पं. पन्नालाल साहित्याचार्य का लेखन जैनधर्म पर आधारित धार्मिक ग्रन्थों एवं पुस्तकों के रूप में ही मुख्यतः रहा, परन्तु पंडित जी का साहित्य सृजन ही समूचे संस्कृत साहित्य के लिये अमूल्य धरोहर है। पंडित जी के समृद्ध रचना संसार से संस्कृत की सत्ता स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान मिला है। आज जब संस्कृत के साधकों की निरंतर कमी हो रही है तो पंडित जी का संस्कृत साहित्य ऐसे में और भी उपयोगी है। संस्कृत भाषा के ज्ञान एवं प्रचार-प्रसार के लिहाज से तो पंडित जी का साहित्य लेखन मील का पत्थर साबित हो सकता है। संस्कृत के लिये काम करने वालों को चाहिये कि वे पंडित जी द्वारा रचित साहित्य का अध्ययन अवश्य करें।

सरस्वती आराधक, कुशल लेखक, प्रभावी प्रवक्ता, विवाद रहित विद्वत्ता के संगम स्व. साहित्याचार्य जी (05.03.1911-09.03.2001) मध्यप्रदेश सागर जिले के पारगुवां ग्राम के स्व. श्री गल्लीलाल-स्व.श्रीमती जानकी बाई की संतान एक ऐसे दैदीप्यमान रत्न थे जिन्होंने अपनी लेखनी विद्वत्ता से जैनागम को सरल भाषा में जन-जन पहुँचाने में महती भूमिका का निर्वाह किया।

पूज्य संत गणेश प्रसाद जी वर्णी की प्रेरणा से सन् 1931 में जैन संस्कृत महाविद्यालय सागर में साहित्य अध्यापक के रूप में कार्य प्रारंभ कर दिया तब से अनवरत शिक्षक एवं सन् 1977 से 1983 तक प्राचार्य रहे। अपनी वृद्धावस्था के कारण प्राचार्य पद से मुक्त होकर शेष जीवन पर्यन्त अपनी सेवाएं वर्णी गुरुकुल जबलपुर को देते रहे।

पंडित जी ने अपने जीवन में जितनी साहित्यिक सेवा की और उनकी सेवाओं का जितना सम्मान सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर किया गया उनकी क्षमता का कोई व्यक्ति दशाब्दियों में दृष्टिगोचर नहीं होता है। पंडित जी की मौलिक रचनाओं में सम्यक्त्वचिन्तामणि, सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका, सम्यक् चारित्रगद्यचिन्तामणि, जीवन्धरचम्पू, वर्णीग्रन्थमाला, क्षत्रचूडालंकार, अनुवादित ग्रन्थ आदिपुराण, उत्तरपुराण, पद्मपुराण, हरिवंशपुराण, स्नकरण्डकश्रावकाचार इत्यादि प्रमुख हैं।

संस्कृत साहित्य की सेवा एवं संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में अनवरत पचास से भी अधिक वर्षों से संलग्न, संस्कृत के उद्भट विद्वान् तथा साहित्य-मनीषी पंडित जी, संस्कृत जगत् के वह दैदीप्यमान रत्न हैं। जिनकी साहित्य सेवा को

देखकर भारत के नवरत्न-पारखी, भारतरत्न राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जी आश्चर्यचकित रह गये थे। न केवल संस्कृत साहित्य, विविध दार्शनिक चिन्तन, विचारधारा का तुलनात्मक अध्येता इतना सीधा-सादा और प्रचार की दुनियाँ से दूर कैसे? अपने करकमलों में समर्पित ग्रन्थों के ढेर को देखकर उनमें से एक को छोटकर विद्या-विशारद डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जी ने धड़ाघड़ प्रश्नों की बौछार लगा दी। जैसे मानस राजहंस नीर-क्षीर-विवेक की शक्ति सार्थक कर रहा हो और पंडित साहित्याचार्य जी ने तड़ातड़ प्रश्नोत्तर देना प्रारम्भ कर दिया जैसे कोई डी.लिट् कराने वाला निर्देशक बोल रहा है। राष्ट्रपति महोदय ने अपने गले लगाकर संस्कृत के प्रति, संस्कृत साहित्य के प्रति, संस्कृत साहित्य सेवा मनीषी के प्रति अपने सौजन्य का परिचय दिया।

साहित्याचार्य डॉ. पन्नालाल जी विरचित 'चिन्तामणि-त्रय का समीक्षात्मक अध्ययन' शीर्षक विषय पर डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के द्वारा पीएच.डी. की उपाधि के अतिरिक्त देश में अनेक जगह पंडितजी को सम्मानित किया। सन् 19960 में जीवन्धर चम्पू पर मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद् की ओर से मित्र पुरस्कार, 1974 में गद्यचिन्तामणि पर अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद् के तत्त्वावधान में भारतीयज्ञानपीठ द्वारा गणेशप्रसादवर्णी पुरस्कार, 1974 में श्री वीर निर्वाण ग्रन्थ प्रकाशन समिति इन्दौर ने पुरुदेव चम्पू ग्रन्थ पर आपको सम्मानित एवं पुरस्कृत किया। जैनविद्या संस्थान ने 1983 के महावरी पुरस्कार के लिये सम्यक्त्व चिन्तामणि को चुना है। इस प्रकार पंडित जी द्वारा सम्पादित साहित्य का समादर हुआ। पंडित जी की विद्वत्ता से प्रभावित होकर भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री बी.बी.गिरि ने सन् 1969 में आदर्श शिक्षक के रूप में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया है। 1973 में विद्वत् परिषद् ने पंडित जी की सेवाओं के फलस्वरूप सम्मानित कर रजत पट्ट पर प्रशस्ति प्रदान की है। इसके अतिरिक्त प्रदेश स्तर पर सार्वजनिक संस्थाओं-संगठनों तथा सामाजिक अखिल भारतीय स्तर तक की संस्थाओं ने पंडित जी की सेवाओं का मूल्यांकन कर उन्हें सम्मानित किया है।

अपनी अंतिम इच्छा के अनुरूप आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के (कुण्डलपुर गजरथ के समय) चरणों में देह त्यागी।

# फल, साग की सही प्रासुक विधि एवं सावधानियाँ

पं. राजकुमार जैन

1. संयमी या व्रती किसी भी वनस्पति को या तो रस के रूप में, साग के रूप में, शेक (गाढ़ा रस) के रूप में, चटनी के रूप में लेते हैं। फल के रूप में जैसे गृहस्थ लेते हैं, वैसे नहीं लेते।
2. फलों को जैसे नाशपाती, सेव, केला, अंगूर, आलूबुखारा, अमरूद को 50 या 100 ग्राम जल (वस्तु मात्रानुसार) में फलों के टुकड़े बनाकर कढ़ाही में डालकर कटोरे आदि से ढँककर 5-10 मिनट उबालने से भाप के द्वारा अंदर बाहर प्रासुक हो जाएंगे।
3. प्रासुक वस्तु का स्पर्श, रस, गंध, वर्ण बदलना चाहिए एवं लौकी की सब्जी जैसे मुलायम हो जाए तभी सही प्रासुक मानी जाती है, क्योंकि साधु अधपका हुआ नहीं लेते हैं, कारण कि अंगुल के असंख्यातवें भाग में जीव रहते हैं।
4. लौकी, परवल, करेला, गिलकी, टिंडा आदि की साग बनाई जाती है, जो उबालने, तलने से प्रासुक होती है।
5. बीज निकालकर चटनी बनाने से भी प्रासुक हो जाते हैं। लेकिन ज्यादा बड़े-बड़े टुकड़े नहीं रहना चाहिए। यदि उबालकर चटनी बांटते हैं तो टुकड़े भी प्रासुक रहेंगे। जैसे- टमाटर, कैंथा, अमरूद आदि बीज वाली साग।
6. खरबूजा, पपीता, पका आम, चीकू, इनको छिलका तथा बीज अलग करके शेक (मिक्सी से फेंटकर) बना लें, लेकिन इसमें कोई टुकड़ा नहीं रहे। वह टुकड़ा अप्रासुक माना जाता है।
7. नीबू, मौसमी के दाने अप्रासुक होते हैं, अतः उन्हें गर्म न करें। बल्कि रस निकालें वही प्रासुक है अनार, मौसमी, संतरा, अनानास, नारियल, सेव, ककड़ी, लौकी आदि का रस प्रासुक हो ही जाता है। रस निकालते समय हाथ के घर्षण से प्रासुक हो जाता है। सभी रस काँच के बर्तन, शीशी आदि में रखें, नहीं तो करीब 30 मिनट बाद से विकृत (खराब) होने की संभावना रहती है।
8. कच्ची मूँगफली, चना, मक्का, ज्वार, मटर आदि जल में उबालकर या सेंककर प्रासुक करें तथा सूखी मूँगफली, उड़द, मूँग, चना आदि को साबुत नहीं बनाएं क्योंकि इनके बीच में त्रस जीव रह सकते हैं।
9. किसी भी फल का बीज प्रासुक नहीं हो पाता है, इसलिए आहार में बीज निकालकर ही सामग्री चलाएं। चाहे सब्जी, फल, रस, चटनी आदि कुछ भी हो।
10. आयुर्वेद शास्त्र का भी कहना है कि अग्निपक्व, जल और साग-सब्जी अधिक जल्दी हजम हो जाती है एवं वात, पित्त, कफ का प्रकोप न होने से शरीर निरोग रहता है।
11. ड्राईफ्रूट जैसे-काजू, बादाम, पिस्ता, मूँगफली के दो भाग करके एवं मुनक्का को बीज रहित करके दें।
12. किसमिस, मुनक्का को जल में गलाने से उनके तत्त्व निकल जाते हैं या तो गलाएं नहीं, यदि गलाएं तो उसका जल अवश्य चलाएं।
13. घुना अन्न जैसे-चना, बटरा (मटर), मूँग, उड़द आदि तथा बरसात में फफूँदी लगी वस्तु अभक्ष्य ही होती है। दही, छाछ के साथ दो दल वाले मूँग, उड़द, चना, अरहर आदि जिनका आटा बन जाता है, वे द्विदल हो जाते हैं, जो अभक्ष्य हैं। दही, छाछ के साथ दो दल वाले जिनमें तेल निकलता है। जैसे-मूँगफली, बादाम आदि द्विदल नहीं होते।
14. नमक बाँटकर जल में उबालने से ही सही प्रासुक होता है। लेकिन बाँटकर गरम कर लेने पर भी प्रासुक मान लेते हैं। साधुओं को दोनों तरह का नमक अलग-अलग कटोरी में दिखाएं।
15. कच्चे गीले नारियल को घिसकर बुरादा बनने के बाद गर्म करके बाँटकर चटनी बनाने से ही प्रासुक होता है।
16. भोजन सामग्री को दूसरी बार गर्म करना, कम पकाना (कच्चा रह जाना) ज्यादा पकाना (जल जाना) यह द्विपक्वाहार कहलाता है। यह साधु के लेने योग्य नहीं होता है तथा आयुर्वेद में भी ऐसे भोजन को विषवर्धक माना गया है। चौकों में रोटी कच्ची रहती है तो उससे पेट में गैस बनती है, ध्यान रखें।
17. सब्जी वगैरह में अधिक मात्रा में लालमिर्च का प्रयोग नहीं करें, अलग से रखें क्योंकि भोजन में अधिक मिर्च होने पर साधु को पेट में जलन हो सकती है।
18. आहार सामग्री सूर्योदय से दो घड़ी पश्चात् तथा सूर्यास्त

से दो घड़ी पूर्व के बीच ही दिन में बनाएं। अंधेरे में या रात्रि में बनाने से अभक्ष्य हो जाएगी।

19. जो साधु यदि बूरा या गुड़ नहीं लेते तो उनके लिए छुहारे का पाउडर या चटनी सामग्री में मिलाकर भी दे सकते हैं।
20. जीरे आदि मसाले खड़े नहीं डालें, अलग से पिसें, सिके ही डालें साग में पहले से डालने से जल जाते हैं एवं सुपाच्य भी नहीं होते एवं पेट में गैस बनाते हैं।

### आहार सामग्री की शुद्धि भी आवश्यक

- क. **जल शुद्धि**- 1. कुएँ में जीवानी डालने के लिए कड़े वाली बाल्टी का ही प्रयोग करें एवं जल जिस कुएँ आदि से भरा है, जीवानी भी उसी कुएँ में धीरे-धीरे छोड़ें। कड़े वाली बाल्टी जब पानी की सतह के करीब पहुँच जावे, तब धीरे से रस्सी को झटका दें। ताकि जलगत जीवों को पीड़ा न हो।
2. जब भी चौके में जल छाने, तो एक बर्तन में जीवानी रख लें और जब जल भरने जाएं तो कुएँ में जीवानी छोड़ दें।
3. पानी छानने का छन्ना 36 इंच लंबा और 24 इंच चौड़ा हो तथा जिसमें सूर्य का प्रकाश न दिख सके और छन्ना सफेद हो तथा गंदा एवं फटा न हो।
4. जीवानी डालने के बाद छन्ने को बाहर सूखी जगह में निचोड़ दें, कभी बाल्टी में न निचोड़ें क्योंकि बाल्टी में निचोड़ने से जीवानी के सारे जीव मर जाएंगे।
5. कुएँ का पानी (सोले का) प्लास्टिक की बाल्टी में न रखें।
6. **आहार के योग्य, जल के साधन**- कुएँ का, बहती नदी का, झरने का, व्यवस्थित कुण्ड/बावड़ी का, चौड़ी बोरिंग जिसमें जीवानी नीचे तक पहुँच जावे, छत पर वर्षा का जल, हौज में इकट्ठा करके चूना आदि डालने पर भी चौके के लिए उपयोग कर सकते हैं।
- ख. **दुग्ध शुद्धि**- स्वच्छ बर्तन में प्रासुक जल से गाय, भैंस के थनों को धोकर, पोंछकर दूध दुहना चाहिए और दुहने के पश्चात् छन्ने से छानकर (प्लास्टिक की छन्नी से न छानें)। उसे 48 मिनट में गर्म कर लेना चाहिए। अन्यथा जिस गाय, भैंस का दूध रहता है, उसी के आकार के संमूर्च्छन जीव उत्पन्न हो जाते हैं।
- ग. **दही शुद्धि**- उबले दूध को ठंडा करके बादाम या नारियल की नरेटी का एक छोटा टुकड़ा धोकर उसमें डाल दें, जिससे दही जम जाता है। (यदि दही गाय के

दूध का हो, तो साधु को सुपाच्य रहता है।) छाँछ बनाते समय उसमें घी नहीं रहे। ऐसी छाँछ अच्छी मानी जाती है।

- घ. **घृत शुद्धि**- शुद्ध दही से निकले मक्खन को तत्काल अग्नि पर रखकर गर्म करके घृत तैयार करना चाहिए। इसमें से जलीय अंश पूर्ण निकल जाना चाहिए। यदि घी में जल का अंश रहा, तो चौबीस घंटे के बाद अमर्यादित हो जाता है। मक्खन को तत्काल गर्म कर लेना चाहिए, जिससे जीवोत्पत्ति नहीं होती। इसी प्रकार मलाई को भी तुरंत गर्म करके घी निकालना चाहिए। कई लोग तीन-चार दिन की मलाई इकट्ठी हो जाने पर गर्म करके घी निकालते हैं, वह घी अमर्यादित ही माना जाएगा। वह साधु को देने योग्य नहीं है। घी घर पर ही बनाएं बाजार का शोध का घी कदापि उपयोग न करें।
- ङ. **गुड़ की शुद्धि**- आजकल चौकों में बाजार का गुड़ छानकर उपयोग में लाते हैं, वह अशुद्ध रहता है। इसलिए कई क्षेत्रों में शुद्ध गुड़ बनता है। वह गुड़ मंगवाकर उपयोग में लेना चाहिए।

**श्रावकों को सुझाव**- बाजार में गन्ने के रस की दुकान पर प्रासुक जल से मशीन धुलवाकर और गन्नों का संशोधन करके ज्यादा मात्रा में रस निकलवाकर घर पर ही गुड़ बनाना चाहिए। गन्ने के रस का गाढ़ा सीरा बनाकर यह सीरा भी सीधा सामग्री में मिलाकर चला सकते हैं। यह सीरा चूंक गाढ़ा हो जाता है, इसलिए हरी में भी नहीं आएगा। यह सीरा जो बूरा नहीं लेते हैं और मीठे का त्याग नहीं है, वे भी ले सकते हैं।

### आहार ही औषधि

1. आहार के बाद जब साधु अंजुलि छोड़ने के बाद कुल्ला करें तो उन्हें लौंग, हल्दी, नमक, माजूफल, शुद्ध सरसों का तेल, शुद्ध मंजन, अमृतधारा, नीबू का रस आदि अवश्य दें।
2. गेहूं और चना की बराबर मात्रा वाले आटे की रोटी में अच्छी मात्रा में घी मिलाकर देने से तथा सादा रोटी चोकर सहित देने से स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती है।
3. एक जग पानी में अजवाइन डालकर उबाला हुआ पानी जब साधु जल लेते हैं उसकी जगह चलाने से गैस के रोगों में आराम मिलता है।
4. आहार के अंत में सौंफ, लौंग, अजवाइन और नमक, सौंठ, हल्दी तथा गुड़ की डली, नीबू का रस अवश्य

चलाएं। सभी वस्तुएँ मौसम, ऋतु के अनुसार मर्यादित भी होनी चाहिए एवं मसाले पूर्ण रूप से पिसे हुए हों। तथा इनमें सकरे हाथ न लगाएं।

5. मूँग की दाल छिलके वाली ही बनाएं तथा दाल का पानी भी घी मिलाकर देने से लाभदायक होता है।
6. जल के आगे-पीछे कोई रस न चलाएं तथा नीबू के साथ घी विषवर्धक होता है।
7. दूध के आगे-पीछे खट्टे पदार्थ, दही, रस आदि भी न चलाएं।
8. वात शांति के द्रव्य- गेहूँ, मूँग, घी, मुनक्का, मीठा अनार, पके आम, आँवला, कैंथ, हरे, गौ दूध, सेंधा नमक।  
पित्त शांति के द्रव्य- मधुर रस, चावल की खीर, मुनक्का, आँवला, छुआरा, ककड़ी, केला, घी, दूध।  
कफ शांति के द्रव्य- चना, गुड़, सौंठ, काली मिर्च, पीपर, सौंठ युक्त दूध।

### आहार सामग्री के भक्ष्य, अभक्ष्य की जानकारी एवं आवश्यक निर्देश

सभी ऋतुओं में एक समान

48 मिनिट- दूध (बिना उबला), छाछ (बाद में जल अथवा मीठा मिलाने पर), पिसा नमक।

6 घंटे- पिसा नमक (मसाला मिलाने पर), खिचड़ी, रायता, कढ़ी, दाल, सब्जी।

12 घंटे- छाछ (विलौते समय जल डालने पर), रोटी, पूड़ी, हलवा, बड़ा, कचौड़ी

24 घंटे- दूध (उबला), दही (गर्म दूध का), नमक (पिसा गर्म), मौन वाले पकवान।

आटा (सभी प्रकार का), पिसे मसाले- शीत काल 7 दिन, ग्रीष्मकाल 5 दिन, वर्षा काल 3 दिन

बुरा शक्कर का- शीत काल 1 माह, ग्रीष्मकाल 15 दिन, वर्षाकाल 7 दिन

घी, तेल, गुड़- 1 वर्ष अथवा जब तक स्वाद न बिगड़े गुड़ मिला हुआ दही/छाछ सर्वथा अभक्ष्य है, मीठा मिले दूध का जमाया हुआ दही भी अभक्ष्य है।

रसचलित- स्वाद बदल गया हो, बदबूदार पदार्थ तथा फटा हुआ दूध आदि त्याज्य है।

अज्ञान फल- जिसको हम पहचानते नहीं हैं, ऐसे फल, पत्ते आदि संयमी के लिए योग्य नहीं हैं।

अतितुच्छ फल- जिसमें बीज नहीं पड़े हों, ऐसे बिल्कुल कच्चे छोटे-छोटे फल भी लेने योग्य नहीं हैं।

अभक्ष्य के भेद- त्रस हिंसाकारक, बहुस्थावर

हिंसाकारक, प्रमाद कारक, अनिष्ट और अनुपसेव्य

दूध अभक्ष्य (अशुद्ध)- प्रसूति के बाद भैंस का दूध 15 दिन, गाय का दूध 10 दिन, बकरी का दूध 8 दिन तक अभक्ष्य है।

### निर्देश

1. कमण्डलु में जल 24 घंटे की मर्यादा (उबला हुआ) वाला ही भरें, ठंडा या कम मर्यादा वाला नहीं।
2. जल को तीन बर्तनों में तीन जगह रखना चाहिए, जिसकी गर्माहट में थोड़ा-थोड़ा अंतर हो, जिससे श्रावक साधु की अनुकूलता के अनुसार दे सकें।
3. आहारदान यदि दूसरे के चौके में देवें, तो अपनी आहार सामग्री हाथ में अवश्य ले जाएं।
4. चक्की से जब भी पीसें या पिसवाएं तो वह साफ होना चाहिए, क्योंकि उसमें कोई जीव-जंतु भी हो सकते हैं तथा उसमें अमर्यादित आटा भी लगा रहता है। अतः शीत, ग्रीष्म, वर्षा ऋतु में क्रमशः 7, 5, 3 दिन में चक्की अवश्य साफ करें।
5. हाथ में कोई आहार सामग्री लगी हो तो उन हाथों से आहार सामग्री न दें।
6. हरी क्या है?— जो फल, साग आदि वनस्पति जो अभी गीली है, हरी कहलाती है तथा धूप में पूर्णतः सूख जाने पर हरी नहीं रहती। जैसे- सौंठ, हल्दी आदि।
7. अतिथि संविभाग व्रत वैयावृत्य के समान फलदायी है। पड़गाहन के लिए द्वार पर प्रतीक्षा करने से ही संपूर्ण आहार का फल मिलता है। साधु नहीं आने पर संक्लेश नहीं करना चाहिए। निरंतराय आहार हों, ऐसी भावना भानी चाहिए।
8. परिवार में सूतक-पातक होने पर तथा शवदाह में सम्मिलित होने पर भी आहारदान नहीं दें।
9. आहार देते समय कोई भी मृत्यु सम्बन्धी बातें, पीप चमड़ा आदि असभ्य शब्द बोलने से अंतराय हो सकता है।

### नोट

इस प्रासुकविधि का उपयोग आप स्वयं करें एवं दूसरे लोगों को बताकर करवाएं। इस लेख की तभी पूर्ण सार्थकता हो सकती है। अशुद्धियों पर ध्यान न दें। कमियों को सूचित करें। जिससे और सुधार किया जा सके।

क्षेत्रीय अधिकारी, द.प.सा. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक  
शाखा देवरी (सागर) म.प्र.



# योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

डॉ. वंदना जैन

स्वास्थ्य प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, और निरोग रहना मानव शरीर की स्वाभाविक स्थिति है। व्यक्ति का शरीर निरोग होने के साथ उसका मन, मस्तिष्क और आत्मा भी स्वस्थ और उन्नत हो तभी तो संपूर्ण स्वास्थ्य की अवस्था होती है। प्राकृतिक जीवन के नियमों के अनुसार रहन-सहन, खान-पान तथा दिनचर्या रखने से व्यक्ति स्वयं ही स्वाभाविक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहता है तथा प्रकृति के नियमों के विरुद्ध होने पर ही सभी प्रकार के रोग, कष्ट तथा समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्राचीन पद्धतियां हैं, जिनके संदर्भ प्राचीन ग्रंथों में मिलते हैं। आज स्वास्थ्य संरक्षण एवं विशेषकर मनोदैहिक विकारों के निवारण में इनकी उपयोगिता को देखकर विश्व स्तर पर लोगों में इन चिकित्सा पद्धतियों के प्रति रुचि और जिज्ञासा बढ़ी है। बड़े-बड़े चिकित्सा अनुसंधान संस्थाओं में कार्यरत वैज्ञानिक एवं चिकित्सक भी इनकी उपयोगिता को भली-भांति समझकर अपने अनुसंधानों द्वारा उनकी उपयोगिता को प्रभावित करने में लगे हुए हैं।

जनसाधारण में भी इनके प्रति रुचि बढ़ी है और लोग योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा को अपने जीवन में अपनाने की बात गंभीरता से सोचने लगे हैं, क्योंकि योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली अपने आप में प्रकृति का विज्ञान है। इस विज्ञान में प्रकृति के नियमों द्वारा अस्वस्थ व्यक्ति स्वस्थ हो सकता है और स्वस्थ रह सकता है।

आज ज्यादातर लोग इंजेक्शनों और जहरीली दवाओं के शिकार हैं एवं इसके आदी हो गए हैं। इनमें तुरंत ठीक होने का चमत्कार दिखता है, अतः सामान्य लोग इस ओर आकर्षित होते हैं, किन्तु अब इनके पार्श्व प्रभाव सामने आने से इस चमत्कार की असलियत सामने आने लगी है। इन जहरीली दवाओं से बीमारी दबा दी जाती है। एक बीमारी का दबना

और दूसरी का निर्माण होना इसी चक्र में रोगी फँस जाता है।

## कोई नहीं चाहता

- बार बार बीमार होना।
- अस्पतालों के चक्कर काटना।
- घंटों लाइन में लगना।
- शारीरिक व मानसिक परेशानियों से ग्रस्त रहना।

## हर व्यक्ति चाहता है

- नित्य स्वस्थ रहना।
- इंजेक्शन, ऑपरेशन आदि से बचना।
- एंटीबायोटिक जैसी जहरीली दवाओं से बचना।
- पैसा और समय की बर्बादी से बचना।

## योग व प्राकृतिक चिकित्सा में है

- रोग को जड़ से मिटाने का उपचार।
- रोग प्रतिबंधन का उपचार।
- स्वावलंबन और अहिंसा का विवेक।
- रोगी को स्वयं योगी व चिकित्सक बनने के संस्कार

योग व प्राकृतिक चिकित्सा वह पद्धति है, जो वर्षों से चली आई है और आज भी जिसका निरंतर विकास जारी है, जो एक अति वैज्ञानिक प्रणाली है और जिसमें निदान डॉक्टर दवाईयाँ और अस्पताल प्रधान ना होकर मरीज या कष्ट पीड़ित व्यक्ति प्रधान होता है तथा उसका कष्ट जड़ से दूर करने का प्रयास किया जाता है। इसमें रोग के वास्तविक कारण की खोज की जाती है और कष्ट को दूर करने के लिए सबसे सरल, सबसे प्राकृतिक तथा सर्वाधिक वृद्धि संगत उपाय किए जाते हैं। यह सिर्फ एक चिकित्सा पद्धति ही नहीं वरन् एक संपूर्ण जीवनदर्शन है व स्वस्थ जीवन जीने की कला है।

योग विज्ञान विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर ( म. प्र. )

• क्रोध अनेक पापों का जनक है; उसका परित्याग करके जीवदया में प्रवृत्त होना चाहिए।

Anger sires several sins. It must be renounced and kindness towards all the living beings adopted.

• मारने का विचार, ईर्ष्या और डाह आदि अशुभ मनोयोग हैं।

The thought of killing, jealousy and malice are the inauspicious mental activities.

'वीरदेशना' से साभार

## व्यसन की आग : सब करदे राख

बहुत समय पहले की बात है, जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में सद्गुरु नाम का एक नगर था। उस नगर में भावन नाम का एक बनिया रहता था। हरिदास उसका इकलौता पुत्र था।

भावन के पास अतुल धन-सम्पत्ति थी किन्तु फिर भी उसे विदेश जाकर और अधिक धन कमाने की लालसा थी। उसकी पत्नी उसे विदेश जाने को मना करती थी पर भावन अपनी लालसा नहीं रोक पा रहा था। अपनी चार करोड़ सोने की मुद्राएँ पुत्र हरिदास को धरोहर के रूप में सम्हलाते हुए उसे जुआ-मदिरा आदि व्यसनों से दूर रहने का उपदेश देकर वह और अधिक धन कमाने के लिए विदेश चला गया।

हरिदास कच्ची उम्र का था। अभी उसमें हेय-उपादेय, उचित-अनुचित, लाभ-हानि का निर्णय करने की क्षमता विकसित नहीं हुई थी। समुचित देख-रेख, सम्यक् रोक-टोक, अनुशासन व अंकुश न होने से तथा इतनी अधिक धन-राशि मिल जाने से वह किशोर व्यसनों की ओर उन्मुख हो गया।

धीरे-धीरे हरिदास ने जुए की लत और मदिरा-पान में अपना सारा धन गँवा दिया। पास का धन चुक गया तो हरिदास कर्जा लेने लगा। कुछ ही दिनों में उस पर काफी कर्जा चढ़ गया। लेनदार परेशान करने लगे। हरिदास को धनप्राप्ति का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था।

जैसा आचार-वैसा विचार, जैसी क्रिया-वैसा व्यवहार। व्यसनों में डूबा हुआ व्यक्ति धन पाने के लिए मेहनत-मजदूरी नहीं करना चाहता। वह धन कमाने की कोशिश नहीं करता। वह तो बिना प्रयास, अनायास ही धन पाना चाहता है। इसलिए व्यसनों में रत व्यक्ति चोरी-डाका, धोखा-फरेब आदि कुटेवों में ही उलझता-फँसता जाता है। अंकुश के अभाव में एक अवगुण नित नये अवगुणों को जन्म देता है।

हरिदास के साथ भी ऐसा ही हुआ। व्यसनों के कीचड़ में फँस जाने से उसका हर कदम, हर आचरण उसे और नये-नये व्यसनों के गहरे दलदल में फँसाता जा रहा था। अपना कर्ज चुकाने व खर्च चलाने के लिए उसने चोरी का मार्ग चुना। उसने राजमहल में चोरी करने की योजना बनाई। सही है, जहाँ अथाह धन-सम्पत्ति हो वहाँ चोरी करना आसान भी है और लाभदायक भी। सागर में से सौ-पचास घड़े पानी निकाल लिये जाएं तो सागर पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?

हरिदास ने अपने घर से राजमहल तक एक गुप्त सुरंग बनाई। उस सुरंग से जाकर वह प्रतिदिन अपनी इच्छानुसार धन चुराकर लाने लगा और व्यसनों में गँवाने लगा।

कुछ समय बाद वणिक भावन धन कमाकर अपने घर लौटा। हरिदास उस समय अपने घर में नहीं था। भावन ने अपनी पत्नी के कुशल-क्षेम पूछकर जानना चाहा कि बेटा हरिदास कहाँ है?

माँ अपने बेटे की बुरी आदतों/व्यसनों से बहुत दुःखी थी। उसने पति से बेटे के व्यसनों व खोटे आचरण के बारे में बताते हुए कहा कि वह इस सुरंगमार्ग से राजमहल में चोरी करने गया है। भावन क्रोध व दुःख के कारण उत्तेजना से भर उठा। पुत्र के अनिष्ट की आशंका से घबराकर वह स्वयं उस सुरंग से उसे ढूँढने चल पड़ा।

हरिदास राजमहल से चोरी कर धन लेकर लौट रहा था। सुरंग में अंधेरा था। सामने एक मनुष्य-आकृति को देखकर हरिदास ने सोचा कि वह जरूर कोई भेदिया है जिसे इस सुरंग-मार्ग का पता लग गया है। यह भेद खोल देगा तो मैं मारा जाऊँगा। अपनी मौत से भयभीत हरिदास ने बिना आगा-पीछा सोचे, बिना देखे-भाले उस मनुष्य-आकृति को तलवार से मौत के घाट उतार दिया। आकृति के स्पन्दन रहित हो जाने पर जब हरिदास ने प्रकाश करके देखा तो वह चौंक उठा, उसने पहचाना-अरे! ये तो मेरे पिता थे। पर ये यहाँ कैसे आ गये? सुरंग से बाहर आकर उसने माँ से पूछा तो पता चला कि पिता विदेश से लौट आये थे और उसे ही खोजने गये थे।

पिता का हत्यारा हरिदास दण्ड के भय से घर से भाग निकला और जंगलों में छिपता रहा, जहाँ हिंसक पशुओं का डर, भूख-प्यास आदि के असह्य दुःखों से वह परेशान हो गया। अन्त में दुःख और ग्लानि से पीड़ित हो जंगल में ही मर गया।

ओह! व्यसनों की आग समय की हवा से बढ़ती जाती है। यह आग धन-सम्पत्ति, मान-मर्यादा, ज्ञान-ध्यान, सन्तोष-धैर्य, प्रेम-विश्वास सब कुछ लील जाती है। इन व्यसनों की आग में कुछ भी शेष नहीं रहता, बचता है तो सिर्फ दुःख, अपमान, क्लेश और पीड़ा-पश्चाताप-ग्लानि रूपी राख। व्यसनों से प्रारंभ में क्षणिक भौतिक सुख मिलता है किन्तु उनका अन्त कितना भयावह और दुःखद होता है।

‘पुराणकथा मंजरी’ से साधार

# जिज्ञासा-समाधान

पं. रतनलाल बैनाड़ा

**प्रश्नकर्ता :** पं. बसन्तकुमार जी शास्त्री शिवाड़

**जिज्ञासा :** संयम धारण करने की योग्यता आठ वर्ष की आयु में होती है, ये आठ वर्ष जन्म से मानने चाहिये या गर्भ से ?

**समाधान :** मनुष्यों में गर्भ से निकलने के आठ वर्ष उपरान्त संयम धारण की योग्यता बनती है। श्री वीरसेन स्वामी ने धवला पु. 10 पृ. 278 पर इस सम्बन्ध में इस प्रकार कहा है- गम्भादो..... गुववतीदो। अर्थ-गर्भ से निकलने के प्रथम समय से लेकर आठ वर्ष बीत जाने पर संयम ग्रहण के योग्य होता है; इसके पहले संयम ग्रहण के योग्य नहीं होता है, यह इसका भावार्थ है। गर्भ में आने के प्रथम समय से लेकर आठ वर्षों के बीतने पर संयम ग्रहण के योग्य होता है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं, किन्तु यह घटित नहीं होता है, क्योंकि ऐसा मानने पर योनिनिष्क्रमण रूप जन्म से, यह सूत्र-वचन (इसी पुस्तक के सूत्र नं. 72, 59) नहीं बन सकता। यदि गर्भ में आने के प्रथम समय से लेकर आठ वर्ष ग्रहण किये जाते हैं तो “गर्भपतन रूप जन्म से आठ वर्ष का हुआ” ऐसा सूत्रकार कहते हैं, किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं कहा है। इसीलिये सात मास अधिक आठ वर्ष का होने पर संयम को प्राप्त करता है, यही अर्थ ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि अन्यथा सूत्र में ‘सर्वलघु’ पद का निर्देश घटित नहीं होता है।

उपर्युक्त प्रमाण के अनुसार संयम ग्रहण करने की सबसे कम आयु जन्म से आठ वर्ष बीत जाने पर माननी चाहिये।

**जिज्ञासा :** धवला पुस्तक 9/257 पर कहा है कि अष्टमी, चतुर्दशी और पर्व के दिनों में शास्त्र स्वाध्याय करना योग्य नहीं है। इसकी क्या अपेक्षा लगानी चाहिये?

**समाधान :** स्वाध्याय के अयोग्य द्रव्य, क्षेत्र एवं काल के ऊपर धवला पुस्तक 9 पृष्ठ 255 से 257 तक अच्छी तरह प्रकाश डाला गया है। वहाँ अयोग्य काल का वर्णन करते हुए अष्टमी, चतुर्दशी तथा नन्दीश्वर पर्व के दिवसों आदि में अध्ययन करने के लिये मना किया गया है। ऐसी ही चर्चा मूलाचार के पंचाचाराधिकार में गाथा नं. 80 से 82 तक तथा मूलाचारप्रदीप में छठे अधिकार के 32 से 37 श्लोक तक भी पढ़ने को मिलते हैं। इन गाथा व श्लोकों में

बतलाया गया है कि गणधर एवं श्रुतकेवली आदि के द्वारा कहे हुये ग्रन्थों को स्वाध्याय के योग्य काल में ही पढ़ना चाहिये। परन्तु आराधना ग्रन्थ, मृत्यु के साधनों को सूचित करने वाले ग्रन्थ पंचसंग्रह, प्रत्याख्यान तथा स्तुति के ग्रन्थ, छह आवश्यक को कहने वाले ग्रन्थ आदि जितने अन्य ग्रन्थ हैं, वे सभी कालों में पढ़ने के योग्य हैं।

उपर्युक्त प्रमाण के अनुसार वर्तमान में भी देखा जाता है कि मुनिसंघों में अष्टमी, चतुर्दशी आदि स्वाध्याय के अयोग्य कालों में, सिद्धान्त ग्रन्थों की (श्री कषायपाहुड, श्री षट्खण्डागम एवं इनकी धवला, जयधवला एवं महाधवला टीकाओं की) वाचना नहीं की जाती है, जबकि दशलक्षण पर्व में अष्टमी और चतुर्दशी के दिन भी तत्त्वार्थसूत्र की वाचना प्रत्येक स्थान पर होती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सिद्धान्त ग्रन्थों का स्वाध्याय तो स्वाध्याय के योग्य कालों में ही करना योग्य है। शेष ग्रन्थों का स्वाध्याय कभी भी किया जा सकता है। यहाँ यह भी जानने योग्य है कि उपर्युक्त सिद्धान्त ग्रन्थों का पठन-पाठन गृहस्थों को नहीं करना चाहिये।

**जिज्ञासा :** क्या क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये उत्तम संहनन होना आवश्यक है ?

**समाधान :** उपर्युक्त विषय में ‘संतकम्मपज्जिया’ ग्रन्थ में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि वज्रवृषभनाराच प्रथम संहनन के अलावा अन्य पाँच संहननों के उदय सहित जीवों के दर्शनमोह को क्षपणा करने की शक्ति नहीं है। ‘संतकम्म-पज्जिया’ पृष्ठ 79 पर इस प्रकार कहा है, “पुणोवि अंतिम पंचसंहणुणाणि असंखेज्ज गुणाणि। कुदो? दुविह संजमगुणसेढि -सीससएणब्भहिंयमणंताणुबंधि विसंयोजयण गुणसेढिसीसया -णित्ति तिण्णिवि एगट्टं काऊण णामकम्मसंबंधीणं अट्टावीसेण वा तीसेण वा भजिदमेतं होदि त्ति। किमट्टं दंसणमोहक्खवण गुणसेढीण घेप्पदे? ण, तं खवण (तक्खवणं) सत्ती एदेसि संहणुणाणं उदयसहिदजीवा-णं णत्थि त्ति अभिप्पयादो”। अर्थ और भी अन्तिम पाँच संहनन असंख्यात गुणे हैं। दो प्रकार के संयम गुणश्रेणि शीर्ष और उनमें गुणित अनन्तानुबंधी विसंयोजन गुणश्रेणीशीर्ष इन तीनों को एकत्र करके नामकर्म सम्बन्धी अट्टाईस अथवा तीस प्रकृतिक स्थान से भाग देने पर होता है। दर्शनमोहक्षपक गुणश्रेणि का ग्रहण क्यों नहीं किया। इन संहननों के उदय सहित जीवों के दर्शनमोह को

क्षपण करने की शक्ति नहीं है। इस अभिप्राय से उसका ग्रहण नहीं किया।

**जिज्ञासा :** सम्मूर्च्छन मनुष्य कहाँ-कहाँ उत्पन्न होते हैं?

**समाधान :** मनुष्य दो प्रकार के होते हैं-1. गर्भज 2. सम्मूर्च्छन। इनमें गर्भज मनुष्य तो पर्याप्तक ही होते हैं तथा सम्मूर्च्छन मनुष्य लब्ध्यपर्याप्तक ही होते हैं अर्थात् इनकी एक भी पर्याप्त पूरी नहीं होती है। इनकी आयु श्वासोच्छ्वास के 18वें भाग प्रमाण अर्थात् लगभग  $\frac{1}{24}$  सेकेण्ड होती है। इनके औदारिक शरीर की अवगाहना घनाङ्गुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है, जिस कारण ये आँख के द्वारा दिखाई नहीं देते हैं। ये सभी मनुष्य पंचेन्द्रिय सैनी ही होते हैं। इनकी उत्पत्ति के स्थान के सम्बन्ध में भगवतीआराधना गाथा 781-82 में इस प्रकार कहा है-

कर्मभूमिषु चक्रास्त्रहलभृद्धरिभूभूजाम्।  
स्कन्धाबारसमूहेषु प्रस्त्रवोच्चार भूमिषु ॥  
शुक्रसिंघाणकश्लेष्मकर्णदन्तमलेषु च।  
अत्यन्ताशुचिदेशेषु सद्यः सम्मूर्च्छनेन य ॥  
भूत्वाङ्मुलस्यासंख्येयभागमात्रशरीरकाः।  
आशु नश्यन्त्यपर्याप्तास्तेस्युः सम्मूर्च्छना नराः ॥

अर्थ-कर्मभूमि में चक्रवर्ती, बलभद्र वगैरह बड़े राजाओं के सैन्यों में मलमूत्रों का जहाँ क्षेपण करते हैं, ऐसे स्थानों पर वीर्य, नाक का मल, कफ, कान और दाँतों का मल और अत्यन्त अपवित्र प्रदेश इनमें तो तत्काल उत्पन्न होते हैं। जिनका शरीर अंगुल के असंख्यात भाग मात्र रहता है और जो जन्म लेने के बाद शीघ्र नष्ट होते हैं और जो लब्ध्यपर्याप्तक होते हैं उनको सम्मूर्च्छन मनुष्य कहते हैं।

गोमटसार जीवकाण्ड गाथा 93 की टीका में इस प्रकार कहा है-“सम्मूर्च्छन मनुष्य स्त्री की योनि, कांख, स्तनों के मूल में तथा चक्रवर्ती की पटरानी के सिवाय मूत्र, विष्टा आदि अशुचि स्थानों में उत्पन्न होते हैं।”

सम्मूर्च्छन मनुष्य केवल आर्यखण्ड में ही पाये जाते हैं। भरतक्षेत्र के म्लेच्छ खण्डों में तथा भोगभूमियाँ में नहीं पाये जाते जैसा कि कार्तिकेयानुप्रेक्षा गाथा 133 में कहा है-संमुच्छ्रिया मणुस्सा अज्जव-खंडेसु होंति गियमेण ॥ अर्थ-सम्मूर्च्छन मनुष्य नियम से आर्यखण्डों में ही होते हैं।

श्लोकवार्तिक भाग-5, पृष्ठ-355 पर तत्त्वार्थसूत्र 3/31की टीका में पं. माणिकचन्द्र जी कौन्देय ने लिखा है कि विजयार्थ पर्वतों पर भी लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्य नहीं पाये

जाते हैं।

इस प्रकार सम्मूर्च्छन मनुष्य कहाँ-कहाँ पाये जाते हैं, इसका उल्लेख किया गया।

**प्रश्नकर्ता :** सौ. स्मिता दोषी, बारामती

**जिज्ञासा :** मान कषाय के आठ भेद तो शास्त्रों में आठ भेद के नाम से मिलते हैं तो क्या अन्य कषायों के भेद का उल्लेख भी शास्त्रों में है?

**समाधान :** चारों कषायों में से मान कषाय के आठ भेद तो जगत् प्रसिद्ध हैं ही। अन्य कषायों में माया और लोभ कषाय के भेद तो शास्त्रों में कहे गये हैं, परन्तु क्रोध कषाय के भेद मेरे देखने में नहीं आये। क्रोध कषाय के तो राजवार्तिक अध्याय 8/9 की टीका में अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण एवं संज्वलन इस प्रकार सामान्य से चार रूप ही प्राप्त होते हैं, जिनके उदाहरण पर्वत रेखा, सदृश, पृथ्वी रेखा सदृश, बालू रेखा सदृश तथा जल रेखा सदृश कहे गये हैं।

माया एवं लोभ कषाय के भेद शास्त्रों में इस प्रकार कहे हैं-भगवतीआराधना गाथा नं. 90 में माया कषाय के पाँच भेद कहे गये हैं, जो इस प्रकार हैं-

1. धन आदि की अभिलाषा उत्पन्न होने पर किसी को फंसाने की चतुरता रूप माया का नाम निकृति है।
2. अच्छे परिणाम को ढककर धर्म के निमित्त से चोरी आदि दोषों में प्रवृत्ति करने को उपाधि नामक माया कहते हैं।
3. धन के विषय में झूठ बोलना, किसी की धरोहर का कुछ भाग हरण कर लेना, दूषण लगाना अथवा खुशामद करना सातिप्रयोग माया है।
4. हीनाधिक कीमत की सदृश वस्तुएं आपस में मिलाना, माप-तौल के बांट कम-बढ़ रखना, मिलावट करके माल बेचना यह प्रणिधि नामक माया है।
5. आलोचना करते समय अपने दोष छिपाना प्रतिकुंचन नामक माया है।

लोभकषाय के राजवार्तिक अध्याय 9 के छठे सूत्र में चार भेद कहे गये हैं, जो इस प्रकार हैं- 1. जीवन लोभ 2. आरोग्यलोभ 3. इन्द्रियलोभ 4. उपभोग लोभ। इनकी परिभाषा स्पष्ट है। ये चारों भेद भी प्रत्येक स्व-पर विशेष के भेद से दो-दो प्रकार के होते हैं।

1/205, प्रोफेसर कालोनी

आगरा -28002

मार्च 2006 जिनभाषित / 29

# समाचार

## परमपूज्य मुनि श्री 108 प्रमाणसागर जी के कोलकाता आगमन पर अभूतपूर्व धर्म प्रभावना

कोलकाता काकुड़गाछी क्षेत्र में नवनिर्मित मंदिर जी के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर कोलकाता दिगम्बर जैन समाज के निवेदन पर परमपूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के युवा शिष्य प्रखरवक्ता मुनि श्री 108 प्रमाण सागर जी महाराज के आगमन से यहाँ अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हो रही है।

विगत दिनों पूज्य मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज का प्रवास बेलगछिया उपवन मंदिर जी में हुआ। वहाँ श्यामबाजार स्थित देशबन्धु पार्क में पूज्य मुनि श्री के सार्वजनिक प्रवचनों से जैन जैनेतर समाज ने धर्म लाभ प्राप्त किया।

बेलगछिया उपवन मंदिर जी से विहार कर हावड़ा डबसन रोड में पूज्य मुनि श्री का प्रवास लगभग एक महीने रहा। इनके यहाँ प्रवास के अवसर पर जितनी धर्म प्रभावना हुई आज तक नहीं देखी गई। बच्चे, युवा, आबालवृद्ध स्त्री-पुरुषों ने पूज्य महाराज जी के प्रवचनों का लाभ उठाया। पूज्य प्रमाणसागर जी महाराज जब आहारचर्या के लिये बाहर जाते तो सैकड़ों नर-नारी अभूतपूर्व चर्या को देखकर नतमस्तक हो जाते थे। यहाँ तो जैन-अजैन का भेद ही मिट गया। स्थानीय गुलमोहर पार्क के विशाल प्रांगण में आयोजित नव दिवसीय प्रवचन श्रृंखला में सैकड़ों जैनेतर श्रद्धालु प्रतिदिन महाराज जी के प्रवचनों में आते देखे गये।

विगत 9 फरवरी को पूज्य मुनि श्री प्रमाणसागर जी हावड़ा डबसन रोड से विहार कर बंगवासी मंदिर जी के दर्शन करते हुए कोलकाता की हृदयस्थली बड़ा बाजार में विराजमान हैं। स्थानीय श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर जी में पूज्य मुनि श्री का मंगल प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 8:15 बजे से आयोजित है। प्रातः 7 बजे से धार्मिक शिक्षण शिविर प्रारम्भ होता है। जिसमें लगभग दो सौ भाई-बहिन भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

अजीत पाटनी

## योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सम्मदेगिरि अतिशय क्षेत्र गोसलपुर (जबलपुर) में दिनांक 5 फरवरी से 10 फरवरी 2006 तक छतरपुर से पधारे मध्यप्रदेश योगकिंग डॉ. फूलचन्द्र जी योगीराज द्वारा

योग का प्रशिक्षण क्षेत्र में स्थित गुरुकुल के बच्चों को प्रदान किया गया। इस शिविर में गुरुकुल के अधिष्ठाता एवं क्षेत्र प्रमुख ब्र. विनोद भैया का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

## एलोरा गुरुकुल में प. पू. आर्यनंदी महाराज श्री की पुण्यतिथि सम्पन्न

एलोरा के पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल में 7 फरवरी को तीर्थरक्षा शिरोमणि आचार्य परम पूज्य आर्यनंदी महाराज की 6 वीं पुण्यतिथि बड़ी धूमधाम से मनाई गई। आर्यनंदी महाराज ने ही इस गुरुकुल की नींव डाली थी और अब यह गुरुकुल निरंतर फलफूल रहा है।

प्रदीप कुमार

## अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना का 14 वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बीना, 20 फरवरी 1992 को स्थापित अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना ने अपनी सफलतम यात्रा के 14 वर्ष पूर्ण कर 15 वें वर्ष में प्रवेश किया। इस पुनीत अवसर पर श्रुत महोत्सव का कार्यक्रम एक आध्यात्मिक वातावरण में श्रुताराधना के रूप में सम्पन्न हुआ।

सचिन जैन

## प्रो. डॉ. भागचन्द्र जैन राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित

प्रो. भागचन्द्र जैन पूर्व विभागाध्यक्ष, पालि-प्राकृत विभाग, नागपुर विश्वविद्यालय को पालि-प्राकृत साहित्य में विशिष्ट योगदान के लिये दिनांक 6 दिसम्बर 05 को राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति के करकमलों से राष्ट्रपति एवार्ड से सम्मानित किया गया है।

लगभग 67 वर्षीय प्रो. जैन का जन्म बम्हौरी छतरपुर (म.प्र.) में हुआ। आपने संस्कृत साहित्य में आचार्य, प्राकृत एवं जैनशास्त्र में शास्त्राचार्य, संस्कृत, पाली एवं प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व में एम.ए., पाली एवं प्राकृत में पीएच.डी., हिन्दी, पाली एवं प्राकृत तथा संस्कृत में डी. लिट्. की उपाधियां प्राप्त कीं। आपने अध्यापन कार्य के अंतराल में लगभग 30 वर्षों तक नागपुर, जयपुर, वाराणसी आदि विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष एवं संस्थानों में लगभग 5 वर्षों तक निदेशक के रूप में कार्य किया।

सुनील जैन



## मुनि श्री प्रशान्तसागर जी कृत ग्रन्थ का विमोचन

15 फरवरी को बीना में हो रहे पंचकल्याणक महोत्सव में ज्ञानकल्याणक के पावन दिवस पर संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री प्रशान्तसागर जी महाराज कृत जिनसरस्वती ग्रन्थ का विमोचन हुआ। इस ग्रन्थ में 56 अध्याय हैं, जो चार अनुयोगों में विभक्त हैं। प्रश्नोत्तर शैली के इस ग्रन्थ की सभी ने भूरिभूरि प्रशंसा की। ग्रन्थ का विमोचन पंचकल्याणक में बने भगवान के माता-पिता एवं सौधर्म इन्द्र दिनेश चक्रवर्ती एवं डॉ. ऋषभ बरया ने किया।

लेखक : पू. मुनि श्री प्रशान्त सागर जी महाराज

निर्देशन : पू. मुनि श्री निर्वेग सागर जी महाराज

संपादन : ब्र. भरत, स्लीमनाबाद

प्रकाशक: धर्मोदय साहित्य प्रकाशन, स्लीमनाबाद

आनंद जैन

### रत्नम्मा हैगड़े का चिर वियोग



21 जनवरी 2006 की शाम को गहरा अंधेरा कुछ जल्दी छा गया, धर्मस्थल के धर्माधिकारी राजर्षि डॉ. वीरेन्द्र हैगड़े की माता जी मातुश्री रत्नम्मा हैगड़े के आकस्मिक वियोग का समाचार जिसने जहाँ सुना वहीं शोक में डूब गया।

रत्नम्मा जी की वात्सल्य और ममता भरी छवि सहसा आँखों में छा गई और इनके विछोह की पीड़ा हर आँख से टपक पड़ी। क्षण भर में समाचार सर्वत्र फैल गया कि सड़क-दुर्घटना ने रत्नम्मा जी को हम से सदा के लिये छीन लिया है।

जन-कल्याण और साधु-संतों की सेवा 78 वर्षीय रत्नम्मा जी के जीवन का व्रत बन चुका था। उनकी प्रेरणा से कर्नाटक में अनेक जनसेवी संस्थाओं की स्थापना हुई थी। कुछ संस्थाएँ तो उनकी सहायता से ही चल रही थीं। कर्नाटक की जनता ने “दानचिंतामणि अत्तिमव्वे प्रशस्ति” समर्पित करके उनकी परोपकारी प्रवृत्ति को रेखांकित किया था। आठों याम पर - हित की कामना में डूबी रहने वाली उन जैसी ममतामयी महिला कर्नाटक में आज दूसरी दिखाई नहीं देती।

धर्मस्थल में भगवान बाहुबली की 39 फुट उत्तुंग विशाल मूर्ति रत्नम्मा जी की अटल भक्ति और अडिग संकल्प शक्ति का जीवन्त प्रतीक बनकर प्रतिष्ठित हुई थी। कारकल में

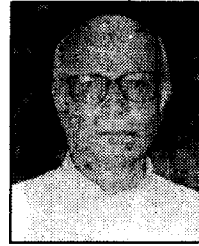
संचालित ‘भुजबली श्राविकाश्रम’ मातुश्री रत्नम्मा हैगड़े की उदारता का एक प्रेरक स्मारक कहा जा सकता है। महामस्तकाभिषेक के लिये श्रवणबेलगोला जाने के पूर्व उसी श्राविकाश्रम की व्यवस्था देखने वे धर्मस्थल से कारकल के मार्ग पर चली थीं, पर होनी की अटल ने उनकी इस छोटी सी यात्रा को ‘महायात्रा’ में बदल दिया।

रत्नम्मा जी अपने पीछे एक सुपुत्री तथा चार सुपुत्रों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि उनके जाने से लाखों लोगों ने मातृ-वियोग की वेदना का अनुभव किया है।

हैगड़े परिवार के शोक में सहभागी होने के लिये चारों ओर से उनके परिचितों, शुभचिंतकों और भक्तों का ताँता लगा है। हर कोई शोक से संतप्त है, फिर भी दूसरों को संवेदना देने में संलग्न दिखाई दे रहा है।

नीरज जैन

### शिक्षाविद् पन्नालाल जी गंगवाल का सत्कार



एलोरा (औरंगाबाद) स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल के महामंत्री, ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमान् पन्नालाल जी गंगवाल को श्री चिंतामणि दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर (औरंगाबाद) द्वारा वार्षिक यात्रा महोत्सव के उपलक्ष्य में समाज के दीपस्तंभ सम्मानपत्र प्रदान कर गौरवान्वित किया गया।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रणेता परमपूज्य आचार्य श्री समंतभद्र महाराज के आदेशानुसार तीर्थरक्षा शिरोमणि परमपूज्य 108 आचार्य श्री आर्यनंदी महाराज द्वारा विश्वविख्यात प्राचीन गुफाओं के कारण जिसे पर्यटनस्थल का महत्त्व प्राप्त ऐसे एलोरा ग्राम में सन् 1962 में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल की स्थापना की और आचार्य समंतभद्र जी और आर्यनंदी जी ने इस गुरुकुल संस्था के सूत्र श्री पन्नालाल जी गंगवाल के हाथ सौंपे और तब से अब तक 42 वर्ष श्री गंगवाल संस्था के महामंत्री पद पर कार्यरत हैं।

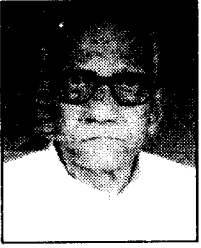
श्री पन्नालालजी गंगवाल ने अपनी युवावस्था में हैदराबाद मुक्ति संग्राम में अपना सक्रिय योगदान दिया। जिसके फलस्वरूप भारतसरकार की ओर से स्वातंत्र्य सैनिक के रूप में आपका गौरव किया गया। स्वातंत्र्य पूर्व काल में आपने हिन्दी एम.ए. की पदवी संपादन की। आप इस संस्था

में महामंत्री पद पर कार्यरत रहते आपने संस्था का संचालन सुचारू रूप से निर्वेध हो, इसलिये दूरदृष्टि रखकर युवा कार्यकर्ताओं की समर्पित नई पीढ़ी तैयार की, संस्था के आर्थिक व्यवहार को अत्यन्त स्पष्ट, पारदर्शी रखना, विद्यार्थी-अध्यापक-कर्मचारी-सेवक आदि की सुविधा का ध्यान रखना और अध्ययन-अध्यापन का स्तर ऊँचा रहे इस पर आपका विशेष ध्यान रहता है।

रा. व. अंबरकर एलोरा

### धनरालाल जी बज किशनगढ़ वालों की सल्लेखना

संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम भक्त श्री धनरालाल जी बज उम्र 83 वर्ष का दिनांक 17.12.05 को रात्रि 2 बजे चारों प्रकार के आहार का त्याग श्री मती प्रतिभा जी जैन, प्रवचनकर्ता (श्री दिग. श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर) द्वारा रात्रि के 11 बजे करवा दी थी, धीरे-धीरे प्राण



निकलते गये, कहीं भी संक्लेश परिणाम चेहरे पर दिखाई नहीं दिये। श्री बज साहब ने स्वयं त्याग करके 9 बार णमोकार मंत्र बोलकर प्राणांत किया।

श्री बज साहब पिछले 50 वर्ष से किशनगढ़ में रह रहे थे, उन्होंने 1960 तक के. डी. जैन विद्यालय में अध्यापक पद पर कार्य किया। पश्चात् 1961 से अपनी स्वयं की पुस्तकों की दुकान अनिल बुक हाऊस प्रारम्भ की थी। उन्होंने इस उम्र में भी नियमित रूप से देवदर्शन करना, रात्रि भोजन नहीं करना तथा साधु संघों की सेवा, वैय्यावृत्ति आदि करते थे।

श्री बज साहब अपने पीछे 3 पुत्र तथा 2 पुत्रियां का भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

### भारतीय रस्म रिवाजों से विवाह सम्पन्न



(जयपुर) दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष और विद्या विकास योजना श्रवणबेलगोला के अध्यक्ष काला ज्वैलरी के प्रवर्तक और प्रमुख जौहरी

श्री विवेक काला की सुपुत्री श्रद्धा का शुभ विवाह श्रीमान् सुरेश जी पाटनी (आर. के मार्बल किशनगढ़) के पुत्र चि. विकास के साथ उनके निवास स्थान रूबी लाईट हाऊस में

23 जनवरी, 2006 को प्रातः 9 बजे स्वजनों एवं स्नेहीजनों के बीच सम्पन्न हुआ।

### ग्रीष्मकालीन शिक्षणशिविरों में अवश्य पधारें

श्रमणसंस्कृति संस्थान सांगानेर (जयपुर) के अधिष्ठाता पं. रतनलाल बैनाडा एवं अन्य विद्वानों के सान्निध्य में दिनांक 24 अप्रैल 2006 से 3 मई 2006 तक बारामती (महाराष्ट्र), 6 मई से 16 मई तक बेलगाँव तथा 17 मई से 28 मई तक कोपरगाँव (महाराष्ट्र) में सर्वोदय ज्ञानसंस्कार शिक्षण-शिविर आयोजित हो रहे हैं। इनमें बालबोध, छहढाला, तत्त्वार्थसूत्र, रत्नकरण्डश्रावकाचार, समयसार एवं कर्मकाण्ड का अध्ययन कराया जायेगा। इच्छुक जन अवश्य पधारें। आवास एवं भोजन की उचित व्यवस्था है। शिविर में 8 वर्ष से ऊपर के बालक-बालिकाएँ एवं वयस्क स्त्री-पुरुष भाग ले सकते हैं। शिविरों में प्रतिदिन प्रातःकाल पं. फूलचन्द्र जी योगाचार्य द्वारा योग और प्राणायाम भी सिखाया जायेगा।

रतनलाल बैनाडा

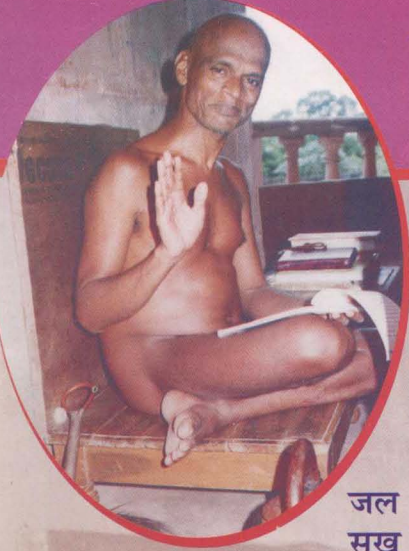
### तत्त्वार्थसूत्र पर राष्ट्रीय युवा विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न

पलवल (फरीदाबाद) हरियाणा की धर्मप्राण नगरी पलवल के नवनिर्मित सर्वोदय जैन तीर्थ क्षेत्र में परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य पूज्य उपाध्याय श्री 108 गुप्तिसागर जी महाराज के मङ्गल सान्निध्य में शान्तिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर दिनांक 27 जनवरी से 29 जनवरी 2006 तक पूज्य उमास्वामी रचित 'तत्त्वार्थसूत्र' पर राष्ट्रीय युवा विद्वत् संगोष्ठी शास्त्री परिषद् के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांसकुमार जैन बड़ौत एवं जैन जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. शीतलचन्द्र जैन प्राचार्य, जयपुर के निर्देशन में तथा युवा विद्वान् पं. सुनील जैन संचय जैनदर्शनाचार्य नरवाँ तथा पं. आशीष जैन शास्त्री, शाहगढ़ के संयोजकत्व में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। उल्लेखनीय है पहली बार युवा विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन परम पूज्य उपाध्याय श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज के मङ्गल सान्निध्य में सोनागिर में दो वर्ष पूर्व हुआ था। परम पूज्य उपाध्याय श्री गुप्तिसागर जी महाराज को भी यह पसंद आया और उन्होंने युवा विद्वानों को उचित मंच व आगे बढ़ाने के उद्देश्य से इस संगोष्ठी हेतु मङ्गल आशीर्वाद प्रदान किया।

सुनील जैन संचय

# बारह भावना

(द्रुतविलम्बित छन्द)



● मुनि श्री योगसागर जी

1.

जल तरंग समान पदार्थ हैं।  
सुख अहो तुम खोज कहाँ रहे ॥  
यह अनादि अनन्त भ्रमीत है।  
इसलिये दुख ही दुख साथ है ॥

2.

शरण तो धन दौलत ही रहे।  
सतत ही शरणागत जा रहे ॥  
मतलबी दिखते परिवार के।  
मरण से कब कौन बचा सके ॥

3.

मनुज नारक औ पशु देव ये।  
यह चतुर्गति आर्त सहीत ये ॥  
निज स्वरूप नहीं पहचानते।  
भटकते सदियों दुख भोगते ॥

4.

विविध हैं गुनरत्न निजात्म में।  
विकलता फिर क्यों किस बात में ॥  
अखिल विश्व पदार्थ स्वतन्त्र हैं।  
सहज ही निज में रममान हैं ॥

5.

सुखदता जड़ पुद्गल में नहीं।  
इस प्रकार विवेक जगा नहीं ॥  
पृथकता निज से सब वस्तु हैं।  
विमल चेतन नन्दन धाम है ॥

6.

मलमयी यह देह घृणीत है।  
जनक है मल का गुण धर्म है ॥  
किसलिये इससे अनुराग है।  
भटकते इस संसृति में रहे ॥

7.

विषयभोग अरे विष से भरे।  
करम बन्ध महा भयकार रे ॥  
अशुभवर्धक आस्रव है घना।  
इस प्रकार जिनेश्वर देशना ॥

8.

परम पंच महाव्रत पूज्य हैं।  
अशुभ कर्म निरोधक हेतु हैं ॥  
विपुल पुण्य महा शुभ वर्धता।  
भव विनाशक संवर तत्त्वता ॥

9.

मनुज जीवन संयम के लिये।  
तप करो विधि-बन्ध निवारिये ॥  
भव भवान्तर की अधनिर्जरा।  
यह वही वरता भव से डरा ॥

10.

यह त्रिलोक निसर्ग अनादि से।  
छह प्रकार सु द्रव्य यहाँ बसे ॥  
करम चेतन नाटक को रचे।  
मिट गये इसमें रच ओ पचे ॥

11.

मनुज दुर्लभ योनि महान है।  
स्वरग देव सदा तरसे रहे ॥  
सकल संयम तो नर साधता।  
भव समुद्र तरे पर तारता ॥

12.

परम पावन धर्म जिनेश का।  
स्वपर-बोध सुधा उपदेश का ॥  
पतित पावन जो जग को करे।  
यह दयामय धर्म सभी बरें ॥

प्रस्तुति - रतनचन्द्र जैन



## गुरु चरणों में समाधिमरण

श्रीमती कुसुम देवी जैन, जिन्हें हम सब बड़ी बाई के नाम से जानते हैं, वास्तव में पूरी समाज में अग्रणी और बड़ी ही थीं। 13-14 वर्ष की उम्र में सुसंस्कारित परिवार बीना से सतना के धर्मज्ञ एवं संस्कारित श्री पं. केवलचंद जी के बड़े सुपुत्र कैलाश चन्द्र जी सर्राफ की धर्मपत्नी के रूप में आई थीं।

बुजुर्गी के आशीष से उनके गुण जो यहां आकर विशेष रूप से पल्लवित हुए, वे अपने आप में एक उदाहरण हैं। आपकी सहज प्रवृत्ति - सरलता - मिलनसारिता और धर्म के प्रति आस्था, देव - शास्त्र - गुरु के प्रति असीम श्रद्धा, स्वाध्यायशीलता, समाज के उत्थान के विषय में चिंतन के साथ ही पारिवारिक दायित्वों का भी समुचित निर्वहन उनके अद्वितीय गुण थे।

परम पूज्य 1008 बड़े बाबा कुंडलपुर सिद्ध क्षेत्र में विराजित परमपूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के संघ के दर्शनार्थ एवं चौका लेकर भीषण ठण्ड में भी सतना से कुण्डलपुर गई थीं। विगत 7 दिनों से धर्म ध्यान में रत थीं। इस पुण्य कार्य में आपके साथ समाज की अन्य धर्मानुरागी महिलायें भी गई थीं।

दिनांक 14 जनवरी की सुबह अनमोल थी आपने नियमित देव दर्शन पूजन, भक्ति की और पूज्य मुनि श्री 108 समयसागर जी का पङ्गाहन किया, परिक्रमा की और नवधा भक्ति के अनुसार महाराज श्री की पूजन की एवं अर्घ्य चढ़ाया और वही आपके जीवन का अंतिम अर्घ्य बन गया। आपने अपनी नश्वर देह का त्याग संयमपूर्वक गुरु चरणों के सान्निध्य में पावन सिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर की धरा पर किया, जो जैन धर्मानुसार बड़े पुण्य की बात है। कितने - कितने जन्मों का पुण्य फलीभूत होता है जब इस प्रकार का मरण प्राप्त होता है। हम सभी उनके द्वारा पालन किए गए उत्कृष्ट श्रावक धर्म की अनुमोदना करते हुए कुण्डलपुर के बड़े बाबा से विनय करते हैं कि बड़ी बाई शीघ्र अतिशीघ्र अपनी संसार यात्रा पूरी कर सिद्धालय की ओर प्रयाण करें, हम सभी ऐसी भावना भाते हैं।



## मृत्यु महोत्सव



श्रावकरत्न श्री रतीलाल चुनीलाल का निर्मल परिणामों के साथ दिनांक 6.1.06 शुक्रवार को समाधिमरण हुआ। क्षपक की साधना आठ दिन पूर्व में प्रारम्भ हो गई थी। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य ब्र. संजीव भैया कटंगी के निर्देशन में वीतराग भगवान के समक्ष क्षपक ने सप्तम प्रतिमा के व्रत अंगीकार किये। 10 दिन पूर्व अन्न भोजन का आजीवन त्याग, क्रमशः घटते-घटते दो दिन पूर्व चारों प्रकार के आहार त्याग कर यम सल्लेखना ग्रहण की। अंतिम दिवस उत्साह पूर्वक 500 लोगों ने सम्मिलित कर्मदहन विधान किया। इस अवसर पर क्षपक का उत्साह देखते ही बनता है। विधान के ही बीच गणिनी आर्थिका ज्ञानमती माता जी माता जी का सान्निध्य, सम्बोधन क्षपक के वैराग्य वृद्धि में सहायक बना। क्षपक के उत्साह साहस और सजगता ने समूची बम्बई समाज को एक अनुकरणीय दिव्य उपदेश दिया। अंत में मृत्यु-महोत्सव शोभा यात्रा का भव्य आयोजन हुआ। समाज का श्री रतीलाल जी का यह समाधिमरण महोत्सव नगर के श्रावक-श्राविकाओं को समाधिमरण करने के लिये प्रेरित कर गया। क्षपक ने पूर्व में दसलक्षण व्रत, सोलहकारण व्रत करके अपनी आत्म को संस्कारित किया था। दिनांक 8.1.06 रविवार, पारेख हॉल में दोपहर 2 बजे क्षपक श्री रतीभाई दोशी की अमृतभाई शाह एवं अशोकभाई शाह की अध्यक्षता में विनयांजली अर्पित की। सभा का संचालन मंत्री श्री सुरेश भाई मेहता ने किया।